

Ratnank

रत्नांक

महाविद्यालय पत्रिका, द्वितीय अंक : मार्च 2018



KNOWLEDGE IS POWER



KNOWLEDGE IS POWER

श्री रत्नलाल कंवरलाल पाटनी गल्स कॉलेज

अजमेर रोड, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) 305801
दूरभाष : 01463-307000, ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in

श्री रत्नलाल कंवरलाल पाटनी गल्स कॉलेज, किशनगढ़

संरक्षक

CA सुभाष अग्रवाल

परामर्शी

डॉ. वन्दना भट्टनागर

डॉ. शैलेन्द्र पाटनी

सम्पादक

डॉ. हुकम सिंह चम्पावत

सम्पादन समिति

डॉ. मितेश जुनेजा

निहारिका शर्मा

टंकण

नेहा शर्मा

विज्ञापन

अमित दाधीच

राजेश जैन

पता :-

श्री रत्नलाल कंवरलाल पाटनी गल्स कॉलेज,
अजमेर रोड, किशनगढ़,

अजमेर (राजस्थान) 305801

दूरभाष : 01463-307000

ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in

विषय

पृष्ठ

रत्नांक

2

अध्यक्ष संदेश

3

सचिव संदेश

4

प्राचार्य संदेश

5

सम्पादकीय

6

हर वस्तु की उपयोगिता

7

मैं क्यूँ बदलूँ

8

जीवन में व्यक्तित्व विकास की अहम भूमिका

9

मैंडकों का संरक्षण

10

पुरतक समीक्षा-द सिक्रेट

11

नैतिक शिक्षा-एक अतीत

12

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, मैं क्यूँ रुकूँ

13-14

जैण्डर संवेदनशीलता की समझ

15

भारत में अक्षय ऊर्जा तकनीक की भूमिका

16

विटामिन बी 12

17

पुरतकालयों में ई-संसाधनों का महत्व

18

सोशल मीडिया का युवा पीढ़ी पर प्रभाव

19

छात्राओं द्वारा लेखनी

20-37

रक्तदान महादान

37

संघर्ष एक अवधारणा

38

अंग्रेजी लेखन

39-41

रत्नांक



एक शिक्षा स्वप्न

वि

शाल हृदयी, सक्षमता की प्रतिमूर्ति पूज्य 'बाबासा' का शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा स्वप्न जिसे वे अन्तर्मन से छूकर कहते थे कि इस शहर के आस-पास की निवासित समस्त बालिकाओं में शिक्षा की अलख जगाने हेतु एक ऐसा महिला शैक्षणिक केन्द्र हो जिसमें वे अपने भविष्य को निखारकर आत्मनिर्भर बन सके। वे महान व्यक्तित्व जिन्होंने अपने दीर्घ एवं गहन अनुभव से यह महसूस किया कि यदि घर की एक कन्या पढ़ेगी तो अनेक पीढ़ीयाँ शिक्षित होंगी तथा वे कहीं दबेगी नहीं, हारेगी नहीं स्वयं को सफल, सक्षम बनाये हुए एक नव समाज की स्थापना करेंगी।

उनके इसी दिव्य स्वप्न को साकार करने का पवित्र कर्तव्य उनके परिजनों ने पूर्ण करते हुए किशनगढ़ क्षेत्र को अत्याधुनिक शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा शिक्षण संस्थान समर्पित किया जिसे देखते ही लगता है मानो सरस्वती वाणी को ऊर्जसित करता ऐसा अद्भुत, अनुपम, अद्वितीय शैक्षिक संस्थान पहले नहीं देखा ! इन पावन व उच्च विचारों के धनी 'बाबासा' एवं उनके परिवारजनों की शोभा जितने भी शब्दों में की जाए वहाँ शब्दों की अल्पता प्रतीत होने लगती है।

पूज्य 'बाबासा' को कोटि-कोटि नमन !

1

“रत्नांक”

“रत्नांक”

शब्द दो शब्दों यथा 'रत्न + अंक' शब्द से मिलकर बना है, जिसमें 'रत्न' से आशय धरती से प्राप्त बहुमूल्य खनिज पदार्थों से माना जाता है, जिसका सामान्य अर्थ प्रसिद्ध चमकीले खनिज पदार्थ हीरे, मणि, नगीना या जवाहारात से लिया जाता है। इसका विशिष्ट व महत्वपूर्ण अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ' है।

इसमें दूसरा शब्द अंक है जिसका अर्थ संख्या, गोद, चिन्ह व भाग्य माना जाता है। अतः 'रत्नांक' शब्द से आशय 'रत्न के लिए अंक' या 'रत्न की गोद में' से लिया जा सकता है। यहाँ 'रत्नांक' शब्द इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारा पूरा समूह परम आदर्णीय श्री रत्नलाल जी एवं उनके आत्मज कंवरलाल जी से ही पल्लवित है। “रत्नांक” शब्द में दो वर्णों यथा 'र' व 'क' की अपनी एक विशिष्ट महत्वा प्रतिपादित है इस शब्द में अग्र वर्ण 'र' पूजनीय श्री रत्नलाल जी का स्मरण करता है तथा शब्द का अन्तिम व पश्च वर्ण 'क' परम आदर्णीय श्री कंवरलाल जी को पुष्ट करता है साथ ही ये वर्ण हमारे महाविद्यालय के नाम को भी चरितार्थ करते हुए प्रतीत होते हैं।

इस शब्द के सामासिक स्वरूप से अर्थ को समझा जाये तो प्रथम अर्थ रत्न के लिए अंक एवं द्वितीय अर्थ रत्न के अंक में अर्थात् रत्न की गोद में से माना जा सकता है। जिसका अर्थ परम पूज्य बाबासाहेब श्री रत्नलाल जी को समर्पित प्रकाशित पत्र से है तथा दूसरा अर्थ पूजनीय बाबासाहेब की गोद में पल्लवित व पुष्पित समूह के सम्बन्ध में माना जा सकता है। महाविद्यालय पत्रिका के सम्बन्ध में हमारा यह प्रयास है कि द्वितीय अंक के रूप में प्रकाशित यह महाविद्यालय पत्रिका ज्ञान की आभा को प्रकाशित करते हुए परमपूज्य बाबासाहेब एवं परम आदर्णीय श्री कंवरलाल जी को समर्पित है। अतः इस पत्रिका का नाम 'रत्नांक' रखना हमारे महाविद्यालय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आर. के. समूह के लिए गौरव की बात है।

2



रत्नांक

संदेश

अनवरत लेखन जीवन में नवीन शब्दों से अनुभूत कराता है। कोई नव लेखक जब अपने अनुभवों को शब्दमय कलम से किसी कागज पर उकेरने का प्रयत्न करता है तब अनंत विचारों में पड़कर यह सोचता है कि लिखना कहाँ से प्रारंभ करें? परन्तु जैसे-जैसे वह शब्दों का ताना बाना बुनता चलता है, उसके आत्मविश्वास में वृद्धि की संभावना शत प्रतिशत बढ़ जाती है। शनै-शनै वह अपने शब्दों के साथ ऐसा तादात्म्य स्थापित करता है कि शब्द व अनुभव एक ही भाषा बोलने लगते हैं। कुछ ऐसा ही कुशल प्रयास महाविद्यालय की 'रत्नांक' पत्रिका के माध्यम से सम्पन्न हो रहा है।

महाविद्यालय पत्रिका 'रत्नांक' के दूसरे अंक हेतु मैं सम्पूर्ण संपादन मण्डल को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ साथ ही कामना करता हूँ कि विद्यार्थियों के जीवन में शब्दों की महता प्रतिस्थापित हो एवं यह लेखन समर्त जनों हेतु उपयोगी सिद्ध होने के साथ अपने सफलतम मुकाम पर पहुँचे।

इन्हीं मंगलकामनाओं सहित।

अशोक पाटनी

अध्यक्ष



संदेश



म

नुष्य जब अपने जीवन की गहन अनुभूति को शब्दों में पिरोने का प्रयत्न करता है तब उसके विचारों की सार्थकता समाज के सम्मुख प्रकट होती है। सामान्य मनुष्य व लेखक के लिए यह मुश्किल हो जाता है कि वह शब्द तो गढ़ लेता है परन्तु उसमें आत्मारूपी भाव नहीं बना पाता। हमारा यह प्रयास है कि हमारे महाविद्यालय की हर बालिका में लेखन का भाव जाग्रत हो और वह एक अच्छी लेखिका के रूप में उभर कर समाज के समक्ष आये, जिससे समाज को एक नई दिशा मिल सके। यही विनम्र प्रयास हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'रत्नांक' के माध्यम से निरंतर हो रहा है।

हमारा विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से हमारी बालिकाओं में लेखन का हुनर ही स्थापित नहीं होगा अपितु वे लेखन में श्रेष्ठ मुकाम हासिल करते हुए महाविद्यालय को गौरव की अनुभूति करवायेंगी। 'रत्नांक' पत्रिका के इन र्घर्जिम प्रयासों में प्रयासरत सम्पूर्ण सम्पादन मण्डल व महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
सचिव



संदेश

'रत्नांक' शब्द ही विद्यार्थियों में लेखन का एक प्रेरणास्प्रद उत्साह है। जब विद्यार्थी अपने विचारों को आत्मसात कर लेखनी उठाता है तो उसका निश्चय व विश्वास प्रबल हो उठता है कि मेरे शब्दों को 'रत्नांक' पत्रिका में स्थान अवश्य प्राप्त होगा तब उसकी शब्दमयी संरचना प्रस्फुटित हो उठती है। वह विद्यार्थी जो प्रथम बार कोई रचना करता है और उसे ऐसा कोरा नामचीन कागज मिलता है जिस पर उसके शब्द प्रकाशित हो तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रह जाता है। ऐसी प्रतिभा को निखारने का पर्याय ही हमारी 'रत्नांक' पत्रिका है।

मुझे विश्वास है इस पत्रिका के 'द्वितीय' अंक में लेखनी प्रतिभा के धनी ऐसे नव लेखकों को इसमें स्थान ही नहीं मिलेगा अपितु चहुँओर से प्रशंसा के बादल उमड़ेंगे। इसी प्रसन्नता के साथ इस पत्रिका हेतु महाविद्यालय परिवार को अशेष शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

डॉ. वन्दना भट्टनागर
प्राचार्य



सम्पादकीय

संकाय सदस्यों ने उत्साह दर्शाते हुए नवविचारों सहित कविता, कहानी, लेख व विविध कथात्मक प्रसंगों का ऐसा सुन्दर, सुगढ़ित संयोजन किया है जो देखते ही बनता है। इस प्रकार हमारे महाविद्यालय में शोध के नये आयाम स्थापित हो रहे हैं जो किसी विशिष्ट उपलब्धि से कम नहीं है। निरंतर दूसरे वर्ष के इन स्वर्णिम प्रयासों को देखकर ऐसा लगता है मानों लेखकों ने न केवल अपना लेखन मजबूत किया अपितु लेखन को पुष्ट करते हुए अपनी नवरचनात्मकता का परिचय दिया है। निश्चित ही इन नवरचना से युक्त प्रयासों से हमारा महाविद्यालय शिक्षा जगत में विशिष्ट पहचान स्थापित करेगा। यह सम्पूर्ण प्रयास हमारे महाविद्यालय के सचिव, प्रबन्धन समिति के सदस्यों व प्राचार्य का है जिनके मार्गदर्शन से सर्वस्व संभव हो सका। मैं इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए श्रद्धावनत हूँ। मैं हृदय से सम्पादक मण्डल व सर्वजनों का आभारी हूँ जिनके लेखन एवं मार्गदर्शन से यह कार्य अपने मुकाम तक पहुँच पाया, साथ ही आशा एवं अपेक्षा है कि ऐसा सौहार्द व सहयोग सदैव बना रहेगा।

- डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
हिन्दी विभाग

'रत्नांक' पत्रिका के इस द्वितीय अंक में हमारे विद्यार्थियों एवं



हर वस्तु की उपयोगिता

का क्या किया?

शिष्य : मैंने अपने पुराने परिधान का प्रयोग अपने बिस्तर के ऊपर बिछाने के लिए किया है।

बुद्ध : अपने पुराने बिछाने के साथ क्या किया?

शिष्य : गुरुजी मैं इसे अपनी खिड़की पर पर्दे के रूप में प्रयोग कर रहा हूँ।

बुद्ध : क्या आपने अपनी पुरानी खिड़की के पर्दे को त्याग दिया?

शिष्य : गुरुजी मैंने इसे चार टुकड़ों में फाड़ दिया और रसोई में गर्म बर्तन इत्यादि को संभालने के लिए उन्हें नैपकिन के रूप में उपयोग कर रहा हूँ।

बुद्ध : पुराने रसोई के नैपकिन के बारे में क्या?

शिष्य : हम फर्श को धोने और पोंछने के लिए उन्हें प्रयोग कर रहे हैं।

बुद्ध : पुराना पौछा कहाँ है।

शिष्य : भगवान्, पुराना पौछा इतना खराब हो चुका था कि हमने उसके सभी धारे अलग-अलग किये और उनकी बत्तियाँ बना कर अपने दीपक के लिए उपयोग में ले ली। उनमें से एक वर्तमान में आपके कमरे में जलाई जा रही है।

बुद्ध : समझ गए और प्रसन्न हुए की उनका शिष्य यह महसूस कर रहा था कि कुछ भी बेकार नहीं है। हर वस्तु की अपनी एक उपयोगिता है।

बुद्ध : क्या? बताओ.....

शिष्य : मेरी पोशाक अब पहनने के लिए ठीक नहीं रही है कृपया मुझे एक नई पोशाक दिलाएं।

बुद्ध ने शिष्य की पोशाक को देखा और पाया कि परिधान पूरी तरह से फट गया है और वास्तव में उसे बदलने की ज़रूरत है। इसलिए उन्होंने दुकानदार से इस शिष्य को नई पोशाक देने के लिए कहा।

शिष्य ने गुरुदेव को धन्यवाद दिया और अपने कमरे की ओर चल दिया।

बुद्ध ने जब इस घटना के बारे में सोचा तो ये महसूस किया कि शायद वह शिष्य को एक महत्वपूर्ण सबक सिखाने का अवसर खो बैठें है।

इसलिए वह उसके साथ बात करने के लिए उसके कमरे में गए।

बुद्ध : आप अपने नए परिधान के साथ आराम कर रहे हैं। क्या आपको और कुछ चाहिए?

शिष्य : शुक्रिया गुरुजी। मैं बहुत सहज हूँ, मुझे किसी और चीज की ज़रूरत नहीं है।

बुद्ध : अब जब आपके पास नया परिधान है। तो आपने पुराने

सी.ए. सुभाष अग्रवाल



मैं क्यूँ बदलूँ

मेरी सूरत, मेरी सीरत, तेरे हिसाब से, मैं क्यूँ बदलूँ?

मेरी अदा, मेरी बोली, तुझे रीझाने को, मैं क्यूँ बदलूँ?

वो खाकी जितनी तेरी है, मेरी भी, फिर मैं क्यूँ बदलूँ?

तू हीरा खाकी का, मैं उस पर बोझ,

इस स्वीकृति को मैं क्यों तरसूँ?

लंबे बाल पसंद हैं मुझे, तेरी तरह छोटे-छोटे बाल,
मैं क्यूँ रखूँ?

वो मर्दाना अंदाज, खाकी, तेरी ज़रूरत तो नहीं,

तो फिर, सिर्फ तेरी सोच की खातिर मैं क्यूँ बदलूँ?

मेरी काविलियत मुझसे है, तुझे कुछ साबित करने को,
मैं क्यूँ बदलूँ?

सिर्फ इसलिए कि तू चाहता है, मैं क्यूँ बदलूँ?

हाँ मुझे नाज़ है मेरी खाकी पर,

हिन्द की रक्षा का वो वचन मैंने भी खाया है,

मेरे लोग, मेरा देश, मेरा कर्तव्य,

याद है मुझे, तेरे जैसा बनने को फिर,

मैं क्यूँ बदलूँ?

ये खाकी मेरी, मुझसे मैं मांगती है,

तो फिर, मैं, तू में क्यों बदलूँ?

तू अपना सिक्का, मैं अपनी पहचान,

तेरा पौरुष, मेरा सम्मान,

किसी के लिए भी, आखिर, मैं, क्यूँ बदलूँ?

तेजस्विनी गौतम
भारतीय पुलिस सेवा

जीवन में व्यक्तित्व विकास की अहम् भूमिका

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में व्यक्तित्व विकास महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस संदर्भ में यह भी समझना जरुरी है कि व्यक्तित्व विशेषक या शीलगुण से ही व्यक्ति के व्यवहार की पहचान होती है। सरल शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि व्यवहार करने के रित्र, सतत् और विशिष्ट तरीके ही व्यक्तित्व विशेषक या शीलगुण कहलाते हैं। यह बताते हैं कि कैसे एक व्यक्ति का व्यवहार दूसरे से भिन्न है, इसे व्यक्तिगत भिन्नता के परिप्रेक्ष्य में भी देख सकते हैं। सही मायने में, व्यक्तित्व से ही किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान बनती है। इस तरह व्यक्तित्व विकास, संज्ञानात्मक और सर्वांगीण विकास से गहनता से जुड़ा है।

अक्सर व्यक्तित्व विकास को लेकर लोगों में कई प्रकार की भ्रांतियाँ होती हैं और इसी का असर होता है कि अभिभावक यह अपेक्षा करते हैं कि किसी भी समय या अवस्थायुक्त बच्चे के व्यक्तित्व में किसी भी तरह से परिवर्तन आ जाए या लाया जा सके। अभिभावक यह भी सोचते हैं कि महाविद्यालय स्तर पर आने के बाद संस्था विविध गतिविधियों का आयोजन कर बच्चे के व्यक्तित्व को बनाने का प्रयास करें। वर्स्तुतः यह समझना बहुत जरुरी है कि व्यक्तित्व का विकास कोई जादू नहीं है जिसमें पलक झापकते ही एक बच्चे के व्यवहार को बदला जा सके। यह एक निरन्तर प्रक्रिया है जिससे धीरे-धीरे बच्चे के व्यक्तित्व को एक दिशा मिलती है।

असल में, बचपन से लेकर किशोरावस्था का समय बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है क्योंकि इसी दौरान उसमें संज्ञानात्मक कौशलों का विकास होता है जिससे बच्चे में सोचने की प्रक्रिया और अभिवृति निर्माण जैसे बदलाव आते हैं जिसमें स्थिरता आ जाने के बाद बदलाव मुश्किल हो जाता है, इसीलिए यह समझना जरुरी है कि वंशानुक्रम, परिवार, विद्यालय, पड़ोस, खेल के साथी, आस-पास का वातावरण और इनके प्रभाव बच्चे के व्यक्तित्व पर गहरा असर डालते हैं।

डॉ. वन्दना भट्टनागर
प्राचार्य

अब सवाल यह उठता है कि ऐसे क्या प्रयास किए जाए जिससे बच्चे के व्यक्तित्व के विकास को दिशा प्रदान की जाए। सही मायने में बच्चे को शुरुआत से ही अपने अनुभव से सीखने के अवसर उपलब्ध कराने, उसे समझने और उसी अनुसार दिशा प्रदान करने से उसके व्यक्तित्व के विकास को एक मजबूत आधारस्तम्भ प्राप्त होता है, इससे बच्चे में समय और परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करने की क्षमता का भी विकास होता है। जो कि भविष्य में आने वाली चुनौतियों और संभावनाओं के लिए भी उसे तैयार करता है। यहाँ इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि व्यक्तित्व विकास को संदर्भित करते हुए बच्चे को एक सामाजिक प्राणी बनाना भी इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

इस संदर्भ में विशेष तौर पर अभिभावक और शिक्षकों की यह भूमिका होनी चाहिए कि वे शुरुआत से ही बच्चे के व्यक्तित्व शीलगुणों को पहचानें और उसी के आधार पर उन्हें आगे बढ़ाने की राह बताएं और जरुरत होने पर जरुरी बदलाव या संशोधन के तरीके भी सुझाएं। आज के समय व्यक्तित्व का मापन करने के लिए कई मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी उपलब्ध हैं जिनके प्रयोग से बच्चे के व्यक्तित्व को जानकर उसे सही मार्गदर्शन व परामर्श भी दिया जाना चाहिए। इसमें शिक्षण संस्थानों की भी भूमिका रहती है। इसीलिए महाविद्यालय स्तर पर ऐसे कई नवाचार किए जाते हैं जो कि विद्यार्थी के व्यक्तित्व को विकसित और परिष्कृत करते हैं। ऐसे कई पाठ्यक्रम और कौशल आधारित कार्यक्रमों का भी शिक्षण संस्थानों में संचालन किया जाता है जो कि विद्यार्थी के व्यक्तित्व को सशक्त और सफल बनाने का प्रयास करते हैं। इस तरह यह कहा जाना चाहिए कि व्यक्तित्व विकास, सर्वांगीण विकास का एक सुदृढ़ आधार स्तम्भ है।



“मेंढ़कों का संरक्षण”: पारिस्थितिक तंत्र में योगदान

वर्षा ऋतु में उछलकूद करने वाला, फूदकरने वाला, टर्ट-टर्ट की आवाज निकालने वाला, कीट-पतंगों को खाने वाला, शीत निष्क्रियता में रहने वाला इत्यादि आप समझ गये होंगे मैं किस जन्तु की बात कर रहा हूँ। जी हाँ, मैं मेंढ़क हूँ। खाद्य शृंखला के महत्वपूर्ण घटक मेंढ़क, उभयचर वर्ग (कशेरुकी) का एक मुख्य जन्तु है जो जल एवं स्थल दोनों पर अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। यह स्थलीय एवं जलीय दोनों ही पारिस्थितिकी तंत्र के पोषक स्तरों पर ऊर्जा प्रवाह में सहयोग प्रदान करता है।

उभयचरों में मेंढ़कों (एन्यूरा) की लगभग 5000 जातियाँ हैं। वर्तमान में इनकी संख्या में उत्तरोत्तर कमी आ रही है। इस कमी का कारण आवास क्षेत्र की कमी जलीय स्त्रोतों में जल की कमी, फ्रॉग लेग्स का खाने में अधिक प्रयोग, पर्यावरणीय परिवर्तन, रसायनों का अधिक प्रयोग प्रदूषकों की अधिकता इत्यादि है। यह सभी कारक किसी पोषक स्तर पर मेंढ़क प्रजाति के असंतुलन को पैदा करने का कारण बन रहे हैं। इस संतुलन को बनाये रखना अतिआवश्यक है नहीं तो खाद्य जाल अरत व्यरत हो जायेगा एवं ऊर्जा प्रवाह इसके ऊपर के पोषक स्तरों तक नहीं पहुँच पायेगा। हम किस प्रकार मेंढ़क प्रजाति को संरक्षित कर सकते हैं ये सबसे बड़ा प्रश्न है जिस पर यदि हमने अभी से मंथन नहीं किया तो वो दिन दूर नहीं जब शनै-शनै प्रकृति की गोद से ये खूबसुरत प्राणी हमेशा के लिए आँखों से ओझल हो जायेगा और हम चिड़िया चुग गई खेत कहावत को याद करते रह जायेंगे।

इसलिए दोस्तों इस प्राणी के संरक्षण के लिए पूरे विश्व मानचित्र पर जिसमें हमारे सोने की चिड़िया भी सम्मिलित है, मैं मेंढ़क बचाओ कार्यक्रम शुरू हो चुका है। ऐसा ही एक संगठन (Save the Frogs, USA) इस दिशा में 2008 से उत्तम कार्य कर रहा है। इस संस्था के संस्थापक एवं कार्यकारी निदेशक डॉ. कैरी क्रिगर 10 वर्षों से विश्व के लगभग 60 देशों में मेंढ़कों के संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ये विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं में मेंढ़क प्रजाति से जुड़े विभिन्न पहलुओं यथा जागरूकता, नये कानून के बारे में जानकारी, वन्यजीव आवासों को बनाना या नष्ट हुए आवासों का पुनः निर्माण, नई पीढ़ी को मेंढ़क प्रजाति से रुबरु करवाना एवं नये संरक्षण कर्ताओं में ऊर्जा का संचरण करना महत्वपूर्ण है। इसी कड़ी में भारत में Save the Frogs ! India की दूसरी अंतर्राष्ट्रीय इकाई की स्थापना की जा चुकी है। जी हाँ बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि इस इकाई का मुख्यालय किशनगढ़ से लगभग 25 किलोमीटर दूरी पर स्थित अजमेर में है। इस इकाई का अध्यक्ष भारत के जाने माने पर्यावरणविद् भारत में, उभयचर एवं सरिसृप संरक्षण के प्रणेता, महर्षि

दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,
अजमेर के पूर्व कुलपति प्रोफेसर के.के.
शर्मा को बनाया गया है।

Save the Frogs संस्था प्रत्येक वर्ष अप्रैल माह के अंतिम शनिवार को **Save the Frogs day** मनाता आया है। इस वर्ष भी 28 अप्रैल को 10 बां वार्षिक सेव द फ्रॉग डे पूरे विश्व में मनाया जायेगा जिसके अंतर्गत सभी शैक्षणिक संस्थाओं में इससे संबंधित विविध कार्यक्रमों जैसे, पोस्टर निर्माण, स्लोगन लिखो प्रतियोगिता, किंवज, फैंसी ड्रेस में ढक बनो प्रतियोगिता, विषय विषेशज्ञ के व्याख्यान का आयोजन, जागरूकता रैली आदि का आयोजन किया जायेगा। इससे जनसाधारण भी आसानी से जुड़ सकता है जिसके लिए http://save_the_frogs.com/india सपदा पद जाकर जानकारी ली जा सकती है।

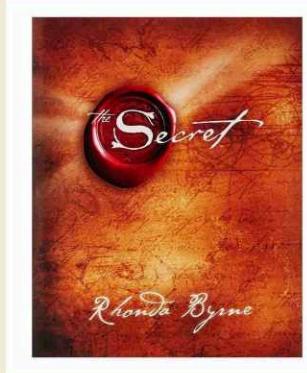
पारिस्थितिक तंत्र के इस अनमोल जीव के संरक्षण के लिए हम सभी को मिलजुलकर प्रयास करने होंगे जिसके लिए हमें सिर्फ थोड़े से प्रयास की जरूरत है। हम हमारे आवास पर एक छोटा सा गड्ढा बनाकर उसमें कुछ जलीय पादप लगाकर प्रत्यक्ष रूप से आस-पास ही में एक कड़ी बन सकते हैं क्योंकि यह प्राणी सिर्फ वर्षा ऋतु के आस पास ही हमें दिखाई देता है। मच्छरों से निजात दिलाने में भी यह एक जैविक समाधान है। आइये 28 अप्रैल, 2018 को हम इस प्रजाति के संरक्षण की प्रतिज्ञा करें एवं पर्यावरण को बचाने में अपना योगदान दें।

विश्वजीत जारोली प्राणी विज्ञान विभाग

पुस्तक समीक्षा ‘द सिक्केट’

रॉन्डा बर्न

मन्जुल प्रकाशन, नई दिल्ली 2016
आई.एस.बी.एन.न.- 9788183220941



रॉन्डा बन द्वारा लिखित 'द सिक्रेट' पुस्तक एक वैज्ञानिक सिद्धान्त 'आकर्षण के नियम' पर आधारित है- जिसका अर्थ है 'पसंद ही पसंद' को आकर्षित करती है। आकर्षण का नियम बुराई और अच्छाई को अलग नहीं करता, बल्कि हम क्या चाहते हैं और क्या नहीं चाहते इसे अलग करता है।

पुस्तक में रॉन्डा बर्न ने मुख्य रूप से इसी बात को केन्द्रित किया है कि आप सपनों को वास्तविकता में कैसे परिवर्तित कर सकते हैं। लेखिका के अनुसार सब चीजें हमारे विचारों पर निर्भर करती हैं। हमारी सोच ही इन सारी चीजों को हमारे जीवन में प्रकट करती है। इसी प्रकार यदि हम किसी बुरी परिस्थिति के बारे में लगातार सोचते रहेंगे तो मजबूरन आपको डर की अनुभूति होगी। इसलिए हमें हमेशा सकारात्मक ही सोचते रहना चाहिए। दुर्घटनाओं और बुरी किस्मत जैसी चीज़ नहीं होती। बल्कि रॉन्डा बर्न ने लिखा है कि -

“आपकी वर्तमान जिंदगी आपके भतकालीन विचारों का ही प्रतिबिम्ब है।”

लेखिका के अनुसार, हमारा दिमाग एक चुम्बक और उत्सर्जक है जिसे आकर्षण के नियम की वजह से समय-समय पर ब्रह्माण्ड से आवृत्तियाँ मिलती रहती है। इस वक्त में हमारा दिमाग हमें कहीं भी ले जा सकता है जिसे हम चाहते हैं जैसे कि कामयाबी हासिल करने का सपना, जो कभी न कभी और किसी तरह से एक न एक दिन वह हमारे पास जरुर आ ही जाता है। दूसरी तरफ युद्ध, गरीबी और असफलता के बारे में लगातार सोचते रहने से भी हमारे जिंदगी में बुरी परिस्थितियाँ हमेशा बनी रहती हैं। रॉन्डा बर्न ने 'द सिक्रेट' पुस्तक के जरिए हमें यह बताने की कोशिश की है कि बहुत ज्यादा नकारात्मक विचारों के बारे में सोचने से भी हमारी सोच हमें दुर्घटनाओं की तरफ ले जाती है। दुनिया की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाए विश्वास, प्रेम, प्रचुरता, शिक्षा और शांति पर ध्यान व ऊर्जा लगाए। रॉन्डा बर्न ने इसे तीन कदम में विभाजित किया है- मांगें, यकीन करें एवं पाएं।

पहला कदम : मांगना है। ब्रह्माण्ड को बता दें कि आप क्या चाहते हैं। ब्रह्माण्ड आपके विचारों पर प्रतिक्रिया करता है।

दूसरा कदम : यकीन करना है। यकीन करें कि वह चीज आपकी हो चुकी है। अदृश्य में यकीन करना।

तीसरा कदम : प्रक्रिया का तीसरा और आखिरी कदम है पाना। इसके बारे में



अच्छी भावनाएं महसूस करें। उसी
तरह महसूस करें, जिस तरह आप
उस चीज को पाने के बाद महसूस
करेंगे। ऐसा बर्ताव करने से आवृत्तियां
आपकी सकारात्मक सोच को ब्रह्माण्ड
में भेजेंगी और अंततः आपकी इच्छा
वास्तव में पूरी होगी।

उन्होंने ऐसा करने के लिए एक वाक्य
को बार-बार दोहराने की सलाह दी है-
“मुझे अपनी जिंदगी में सब कुछ
अच्छा ही मिल रहा है, और अब मुझे वो
सब कुछ मिल रहा है जिसे मैं चाहती
हूँ।” लेखिका के अनुसार आप में
अपनी जिंदगी को परफेक्ट बनाने की
काबिलियत है। आप अपने विचारों के
चालक और मालक दोनों हैं। आपको
इस बात का अंदाजा भी नहीं होगा कि
आप केवल अपने विचारों के बल पर
ही इस दुनिया को जीत सकते हो। इस
पुस्तक में सकारात्मक विचारों के बल
पर ही इस दुनिया पर ज्यादा से ज्यादा
जोर दिया गया है। अंत में ‘द सिक्रेट’
पुस्तक में दिमाग की शक्तियों के बारे
में बताया गया है। विचार ही सच्चाई
बनकर एक दिन हमारे सामने आते हैं।

संक्षेप में लेखिका बताती है कि वह काम करें जिससे आपको खुशी मिलती है। ब्रह्माण्ड की सारी शक्ति आपके पास है।

प्रिया सोनी
कला संकाय, तृतीय वर्ष



नैतिक शिक्षा : एक अतीत

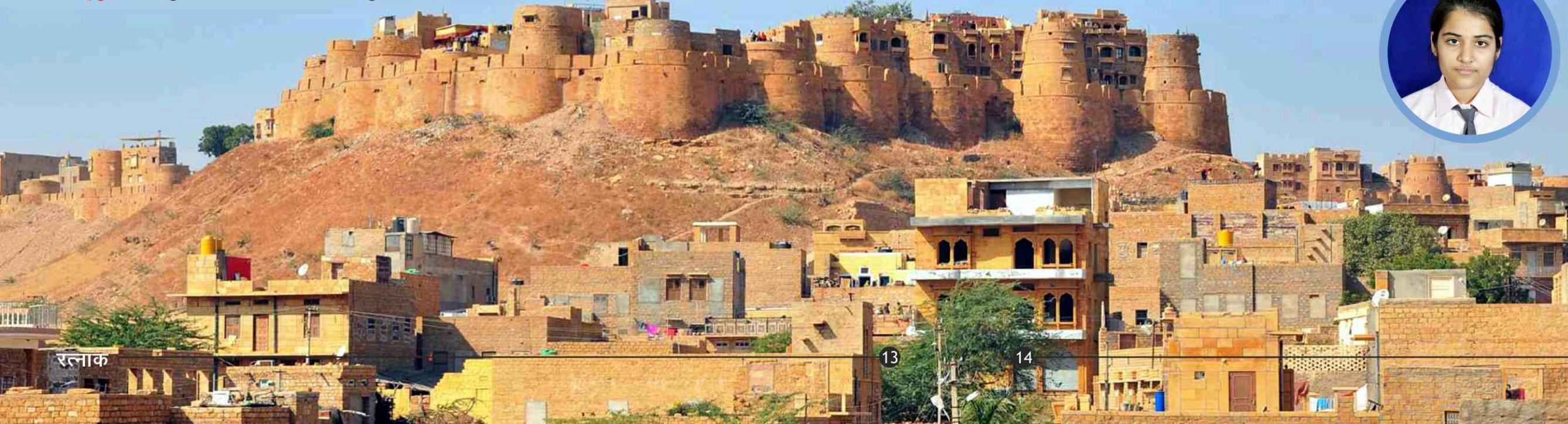
हमारा बचपन कहीं अर्थों में नैतिक शिक्षा व आचरण की सुदृढ़ता से सम्पन्न रहा है। हम अक्सर यह पाठ अपने बड़े-बूढ़ों से दादी-नानी की कहानियों से बड़े चाव से सीखा करते थे। परन्तु आज की स्मार्ट युवा पीढ़ी को देखकर मन ऐसा कोईधता है कि पता नहीं, इस पीढ़ी का आचरण किस दिशा में गमन कर रहा है? कितना अच्छा लगता है उन दादाजी को जिनका पौत्र सुबह उठकर 'जयश्री कृष्ण' बोलते हुए सर्वप्रथम उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ले। यह उनके मन को जीतने का कितना सुंदर नैतिक आचरण है। परन्तु आज ठीक इसका विपरीत दृष्टिगोचर है यदि बड़े बुजुर्ग आगे होकर जय श्री कृष्ण कहे तो वे प्रत्युत्तर भी देने में असक्षमता जाहिर करते हुए अपने हाल में अपने कदम बढ़ा देते हैं। बस यही देखकर मुझे अपने वर्तमान समाज की चिंता होती है कि आखिर पाश्चात्य संस्कृति ने ऐसा क्या वातावरण तैयार कर दिया कि बच्चा स्मार्ट फोन के साथ स्मार्ट तो होता जा रहा है परन्तु संस्कारवान नहीं हो रहा। वर्तमान में यह चिंतनीय विषय है कि हमें अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति के अनुरूप शिक्षा प्रदान करनी चाहिए नहीं तो हम अपनी नैतिक शिक्षा को एक अतीत ही पायेंगे।

अमित दाधीच
प्रशासनिक अधिकारी

राजस्थान के प्रमुख दुर्गः एक अध्ययन

राजस्थान को गढ़ों और दुर्गों का प्रदेश कहा जाता है। राजस्थान का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा जहाँ पर छोटा बड़ा दुर्ग या युद्ध न हुआ हो। राजस्थान के चितौड़, जैसलमेर, रणथम्भौर, जालौर, सिवाणा, गागरोण, भटनेर आदि दुर्ग ऐतिहासिक दृष्टि से प्रसिद्ध हैं जिनके साथ शूरवीरों के पराक्रम और वीरांगनाओं के जौहर की रोमांचक गाथाएँ जुड़ी हैं, जो न केवल क्षेत्रीय, अपितु राष्ट्रीय इतिहास की अनमोल धरोहर हैं। चितौड़ के दुर्ग को सब गढ़ों का सिरमौर कहा जाता है। जिसमें एक नहीं तीन इतिहास प्रसिद्ध साके हुए हैं। इसी प्रकार जैसलमेर गढ़, चितौड़गढ़, जालौर, जोधपुर दुर्ग, बीकानेर दुर्ग आदि अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और गौरव गाथाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। विष्णु धर्मसूत्र में दुर्गों के छः प्रकार बताये गए हैं-

- **धान्वन दुर्गः**: जल विहीन, खुली भूमि पर, पाँच योजना के घेरे में।
- **मही दुर्गः**: प्रस्तर खण्डों या ईंटों से निर्मित प्रकारों वाला, जो 12 फीट से अधिक चौड़ा तथा चौड़ाई से दुगुना ऊँचा हो।
- **वाक्ष दुर्गः**: जो चारों ओर से कंटीले एवं लम्बे वृक्षों, झाड़ियों से मुक्त हो।
- **जल दुर्गः**: चारों ओर जल से गिरा हुआ।
- **नूदुर्गः**: जो चतुरंगिनी सेना से चारों ओर से सुरक्षित हो।



• **गिरि दुर्गः**: पहाड़ों वाला दुर्ग जिस पर कठिनाई से चढ़ा जा सके और जिसमें केवल एक ही संकीर्ण मार्ग हो।

□ **चितौड़ का किला**: चितौड़ का किला समुद्र तल से 616 मीटर ऊँचे मेसा के पठार पर स्थित है। इस किले की स्थापना 7वीं शताब्दी में चित्रांगद मौर्य ने की थी। उसी के नाम से इसका नाम चित्रकूट पड़ा। इसमें 7 प्रवेश द्वार हैं। चित्रांगदमोरी तालाब, आदिनाथ का स्मारक, अद्भुत जी का मंदिर, रानी पद्मिनी का महल, गोरा और बादल के महल, तुलजा माता का मंदिर इसी दुर्ग में स्थित हैं। किले में भव्य गगनमुखी लौखण्डा विजयस्तम्भ है जिसे कीर्ति स्तम्भ भी कहते हैं। इसका निर्माण महाराणा कुम्भा ने मालवा के सुल्तान महमूदशाह खिलजी को पराजित करने की स्मृति में 1438 ई. में कराया था। इसकी प्रतिष्ठा रविवार, 19 जनवरी 1447 ई. में हुई थी।

□ **रणथम्भौर दुर्गः**: सवाई माधोपुर से लगभग 9 कि.मी. दूर रणथम्भौर विन्ध्याचल पर्वतमाला की शृंखलाओं से घिरा एक विकट दुर्ग है। इसका निर्माण 8 वीं शताब्दी में अजमेर के चौहान शासकों द्वारा करवाया गया। इस दुर्ग से सम्बंधित प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में नौलखा दरवाजा, हाथी पोल, गणेश पोल, सूरज पोल, त्रिपोलिया प्रमुख प्रवेश द्वार हैं। इसके अतिरिक्त हम्मीर महल, रानी महल, बादल महल, 32 खम्भों की छतरी, रनिहाड़ तालाब, गणेश जी का मंदिर दुर्ग के प्रमुख स्थान हैं। रणथम्भौर के शासकों में हम्मीर देव पराक्रमी शासक थे उनके समय ही राजस्थान का प्रथम शाका 1301 ई. में हुआ था।

□ **जैसलमेर दुर्गः**: राजस्थान में भाटी राजपूतों का सर्वाधिक बड़ा दुर्ग जैसलमेर का दुर्ग है। 1155 ई. में रावल जैसल ने दुर्ग का निर्माण करवाया था। जैसलमेर का यह दुर्ग 250 फीट ऊँची एक पहाड़ी चोटी पर बना हुआ है, जिसे त्रिकूट पहाड़ी कहते हैं। दुर्ग में कई मंदिर, मकान व महल बने हुए हैं। रंगमहल, गजविलास और मोटी महल बहुत ही खूबसुरत हैं। जैसलमेर दुर्ग राजस्थान में चितौड़गढ़ के पश्चात् सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट है। जैसलमेर का दुर्ग जिसे सोनार का किला भी कहते हैं, अब विश्व धरोहर स्थलों में सम्मिलित कर लिया गया है।

गढ़ दिल्ली गढ़ आगरा, अधगढ़ बीकानेर।

भलों चिणायो भाटियों सिरै तौ जैसलमेर।।

□ **सिवाणा दुर्गः**: परमार वंशीय वीरनारायण ने 954 ई. में सिवाणा किले की स्थापना की थी। प्रारम्भ में इसका नाम कुम्थाना था। सिवाणा का पहाड़ी किला जोधपुर के नरेशों के लिए विपत्तिकाल में ढाल बनकर काम आता था। इसमें कल्ला रायमलोत का धड़ा, महाराजा अजीतसिंह का दरवाजा, कोट, हलदेश्वर महादेव का मंदिर आदि स्थापत्य कला के प्रतीक हैं। आज युग परिवर्तन के साथ हमारे स्वर्णिम अतीत की यह अनमोल संपदा तेजी से नष्ट होती जा रही है। कई गढ़, दुर्ग तो खंडहर भी हो चुके हैं और जो शेष हैं वे अपने अवसान की प्रतीक्षा में हैं। यदि समय रहते हमने इनकी सार संभाल नहीं की तो वह दिन दूर नहीं जब ये सदा के लिए काल के गर्त में विलीन हो जाएंगे। हमें स्मरण रखना चाहिए कि हमारे ये गढ़-दुर्ग उसकी देन हैं जो अब लौट कर आने वाला नहीं है। सीमेंट और कंक्रीट की गगनचुम्बी इमारतें तो बनती रहेंगी परन्तु शौर्य और पराक्रम, त्याग और बलिदान के शाश्वत कीर्तिमान स्थापित करने वाले 'कीर्ति' के कमठाण अब नहीं बनने वाले।

पूजा कंवर राठौड़
कला संकाय, द्वितीय वर्ष



मैं क्यूँ रुकूँ

मैं क्यूँ रुकूँ
यदि कोई मुझे रोकना चाहे,
रोकना टोकना तो दुनिया का काम है,
पर मैं क्यूँ रुकूँ अपने प्रगतिपथ पर ।
आगे बढ़ना, बढ़ते चलना काम है मेरा,
कोई रोके फिर भी क्यूँ रुकूँ मैं ।
रुकना जब था तब भी नहीं रुकी मैं ,
अब कोई भला क्या रोकेगा मुझे,
जब पहले भी कोई रोक सका न मुझे ,
अब भला मैं क्यूँ रुकूँ?

सब भी कर प्रयास रोक सके न मुझे,
मैं प्रगतिशील हूँ, प्रगतिशील रहूँगी,
कोई रोकेगा क्या मुझे,
और मैं क्यूँ रुकूँ ।

नेहा शर्मा
प्रशासनिक विभाग

जैण्डर संवेदनशीलता की समझ : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में...

यह कथन कहने और सुनने में बड़ा सुकून देता है कि लड़का-लड़की एक समान है साथ ही यह बात स्वीकार करने में भी हमें कोई समस्या नहीं होती है कि संविधान और कानून ने भी दोनों को समान अधिकार दिए हुए हैं। समानता के इस पक्ष के होते हुए भी कुछ सवालों के जवाब हमें जरूर खोजने चाहिए, लिंगानुपात में एक बड़ा बदलाव क्यों नहीं आ रहा है? लड़कियों में स्कूली और उसके बाद की शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों के समाधान क्यों नहीं हो पा रहे हैं? सबसे अहम सवाल कि आखिर समाज में लड़कियों के प्रति क्रूरता और अमानवीयता की वारदातों में कमी क्यों नहीं आ रही है? सही अर्थ में इन सवालों के जवाब समानता को जानने से कहीं अधिक उसे समझने, उसकी पालना करने, अपनी मानसिकता में जरूरी बदलाव करने और उस पर कायम रहने से जुड़े हैं और इसीलिए जैण्डर संवेदनशील होना आवश्यक हो जाता है।

जैण्डर संवेदनशीलता का अर्थ लड़का और लड़की का एक दूसरे का सम्मान करने की प्रेरणा देने, परिवार में दोनों के साथ समान व्यवहार करने और उन्हें समान अवसर देने और समाज में भी दोनों को समान महत्व दिए जाने के एक सकारात्मक माहौल को बनाने से जुड़ा है। इसका अर्थ किसी एक को प्रोत्साहित कर दूसरे को हतोत्साहित करने से नहीं बल्कि दोनों को आगे बढ़ने और अपनी पहचान बनाने के समान अवसर उपलब्ध कराने से है। जब कभी जैण्डर समानता और समान अवसरों पर बातचीत होती है तो सामान्यतः इसे गलत तरह से भी प्रस्तुत कर दिया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा जैण्डर इश्यूज् इन एज्यूकेशन पर प्रकाशित आधार पत्र में कहा गया है कि जैण्डर महिलाओं का नहीं बल्कि लोगों का मुददा है। जैण्डर सम्बन्ध कोई प्राकृतिक या दिए हुए नहीं हैं लेकिन समाजीकरण के दबाव से इन्हें प्राकृतिक लगने जैसा बना दिया जाता है। इस तरह समाज के बने हुए यह नियम लड़के और लड़कियों दोनों को ही, उन्हीं नियमों के साथ जीने का दबाव बनाते हैं इससे जहाँ लड़कियों को समाज के प्रतिबन्ध, अन्तर, और प्रभुत्व को सहना पड़ता है तो वहीं लड़के को भी इस पितृसत्तात्मक संस्कृति की रुढ़िवादिता को भुगतना पड़ता है। इस तरह



रत्नांक



डॉ. मितेश जुनेजा
समाजशास्त्र विभाग



भारत में अक्षय ऊर्जा तकनीक की भूमिका

ऊर्जा संकट को दूर भगाओ, अक्षय ऊर्जा तकनीक अपनाओ।



भारत में बढ़ती आबादी के साथ-साथ परम्परागत ऊर्जा स्रोतों की कमी होती जा रही है। परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का सीमित होना एवं उनका अत्यधिक प्रयोग भारत में ऊर्जा संकट पैदा कर रहा है। भारत में ऊर्जा संकट एक अत्यन्त ज्वलन्त समस्या है। ऊर्जा संकट के अलग-अलग कारणों के बावजूद यह स्पष्ट है कि भारत की ऊर्जा समस्या का एक मात्र हल अक्षय ऊर्जा है। अक्षय ऊर्जा का सीधा मतलब है कि ऊर्जा के वे स्रोत जो प्रदूषण नहीं फैलाते हैं। अक्षय ऊर्जा में परम्परागत स्रोत, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, महासागरिय ऊर्जा, भूतापीय ऊर्जा, बायोमास व जैव ईधन हैं। अक्षय ऊर्जा में तकनीकी भूमिका में सौर ऊर्जा का स्थान प्रथम आता है। सौर ऊर्जा एक व्यापक एवं अपरिमित स्रोत है, जो वातावरण में फोटोन (छोटी-छोटी प्रकाश तरंग पेटिकाएँ) के विकिरण से ऊर्जा का संचार करता है। इस स्रोत का वैज्ञानिकों ने तकनीकी विकास कर उपयोग संभव किया है जो भारत में ऊर्जा संकट को कम करने में मदद करता है।

अनुमानतः सूर्य की कुछ ऊर्जा क्षमता 75000×1018 किलोवाट का मात्र एक प्रतिशत ही पृथ्वी की समस्त ऊर्जा आवश्यकता कर पूर्ति कर सकता है। भारत को 5000 मिलियन किलोवाट घंटा के बराबर प्रतिशत भारत में प्रतिदिन 5.5 किलोवाट घंटा प्रति वर्ग मीटर है। उच्चतम सौर वार्षिक रेडिएशन लद्दाख, पश्चिम राजस्थान एवं गुजरात में हम इसका प्रयोग दो रूप में कर सकते हैं। 1. सौर फोटो वोल्टेज़ 2. सौर तापीय ऊर्जा के रूप में।

भारत में ऊर्जा संकट से निपटने के लिए सौर शक्ति टावर का उपयोग अक्षय ऊर्जा तकनीक से छोटे-छोटे दर्पण इस प्रकार व्यवस्थित होते हैं जो विकिरणों को एक छोटे केन्द्र में संकेन्द्रित कर इस तकनीक से पानी गर्म करना, टरबाइन घुमाना आदि है। 1962 में भारत विश्व का वह पहला देश बना जिसने सौर ऊर्जा को अक्षय ऊर्जा के रूप में सौर कुकर का व्यापारिक स्तर पर उत्पादन किया जो ऊर्जा संकट को टालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी क्रम में भारत ऊर्जा मंत्रालय ने छोटे स्थानों के उपयोग के लिए 25 व 100 किलोवाट की दो सौर

फोटो वोल्टाइक ऊर्जा परियोजना बनाई है। ये ऊर्जा की बचत करने के लिए सार्वजनिक छतों पर लगाई जाने वाली सौर ऊर्जा प्रणालियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रीड स्टेशन, इसके अतिरिक्त 25 किलोवाट की दो अन्य परियोजनाएँ कोयम्बटूर के एस.एन. पलायन जी.एस. पलायन में शुरू की गई हैं। भारत में ऊर्जा संकट से निपटने में अक्षय ऊर्जा तकनीक में एक कदम भाष्य पैदा करने के लिए सौर ऊर्जा संकेन्द्रक संग्राहक लगाये गये हैं। इसी चरण में सौर वाल्व प्रणाली आन्ध्रप्रदेश में तिरुमला में स्थापित करना, गांवों में डिश और सौर कुकर को बढ़ावा देना सौर तकनीक से हवा गर्म कर कृषि एवं कपड़ा उद्योगों में सुखाने की तकनीक का प्रयोग अक्षय ऊर्जा एक मात्र विकल्प है। इससे परम्परागत ऊर्जा संसाधनों की काफी हद तक बचत हुई है। इसी तकनीक द्वारा दुर्गम स्थानों पर बिजली उपलब्ध करवायी गई है। सौर ऊर्जा तकनीक प्रणाली इमारतों हाउसिंग परिसर में परम्परागत बिजली संरक्षण के साथ-साथ आधुनिक अक्षय सौर ऊर्जा तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। इसी क्रम में वायु की गति के कारण अर्जित गतिज ऊर्जा पवन ऊर्जा तकनीक भी ऊर्जा संकट को कम करने का विकल्प है। महासागर तापान्तर तरंगों ज्वार-भाटों और महासागरिय धाराओं के रूप में नवीनीकरण ऊर्जा का स्रोत है।

तकनीकी ऊर्जा स्रोत में भूतापीय ऊर्जा जल की अभिक्रिया से गर्म वाष्प उत्पन्न की जाती है। बायोमास ऊर्जा तकनीक में जैव ऊर्जा का पादप, ऐंजायम, जीवाणु आदि महत्वपूर्ण स्रोत है। यह कुड़े-कचरे से भी प्राप्त की जाती है। कृषि एवं खाद्य उत्पादन के अवशेषों से भी जैव ईधन प्राप्त कर भारत में ऊर्जा संकट को दूर करने में अपनी भूमिका निभाते हैं। भारत में ऊर्जा संकट से निपटने के लिए भारत का प्रत्येक नागरिक वैज्ञानिक अक्षय ऊर्जा तकनीकी प्रयोग करें तथा इसे संरक्षण प्रदान कर बचाने का भी प्रयास करें तो पर्यावरण भी स्वच्छ रहेगा, ऊर्जा स्रोत असीमित रहेंगे तथा परम्परागत स्रोतों की रक्षा कर इस ऊर्जा संकट से हम निपट सकते हैं, बच सकते हैं तथा आने वाली भावी पीढ़ी के लिए ऊर्जा बचाकर रख सकते हैं।

दीपिका सोनी
कला संकाय, प्रथम वर्ष



विटामिन बी 12 : एक अध्ययन

रहता है। विटामिन बी 12 की कमी को पुरुषों में ज्यादा पाया गया है। विटामिन बी 12 की कमी को नज़रअंदाज करने से गंभीर मानसिक रोग जैसे सिजोफ्रेनिया होने का भी जोखिम बढ़ रहा है। शरीर को प्रतिदिन 2.4 माइक्रोग्राम विटामिन बी 12 की आवश्कता होती है।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में विभिन्न विटामिन्स, मिनरल्स, प्रोटीन्स, कार्बोहाइड्रेट्स और फाइबर इत्यादि की आवश्यकता होती है। शरीर के लिए ज्यादातर आवश्यक तत्त्वों का पोषण विटामिन आधारित पदार्थों से होता है। एक विटामिन ऐसा है जो शरीर के लिए बेहद आवश्यक है परन्तु आहार तत्त्वों में वह पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होने से ज्यादातर लोगों में इस विटामिन की कमी हो जाती है जिसको हम विटामिन बी 12 के नाम से जानते हैं।

विटामिन बी 12 हमारे शरीर की कोशिकाओं में पाए जाने वाले जीन को बनाने और उनकी मरम्मत में सहायता करता है। यह मस्तिष्क, रीढ़ की हड्डी और नसों के कुछ तत्त्वों की रचना में भी सहायक होता है। हमारे शरीर में मौजूद लाल रक्त कोशिकाओं का निर्माण भी विटामिन बी 12 की सहायता से होता है। यह शरीर के सभी हिस्सों के लिए विभिन्न तरह के प्रोटीन बनाने का कार्य करता है। विटामिन बी 12 की कमी से कई रोग हो सकते हैं। डायग्नोस्टिक लेबोरेट्री मेट्रोमोलिस हेल्थकेयर के डाटा विश्लेषण के अनुसार पांच में से एक व्यक्ति विटामिन बी 12 की कमी की समस्या से जूझ रहा है। 2 लाख महिलाओं सहित 3 लाख से अधिक नमूनों के टेस्ट से पता चला है कि नौ शहरों में 15% से अधिक आबादी में विटामिन की कमी है। 50 वर्ष से अधिक उम्र के लोग और पाचन समस्याओं से पीड़ित लोगों को विटामिन की कमी होने का अधिक जोखिम

हालांकि मांसाहारी पदार्थों में विटामिन बी 12 के मुख्य स्रोत है। हमें डेयरी उत्पादों का सेवन भरपूर मात्रा में करना चाहिए जैसे दूध, दही, पनीर, चीज़, मक्खन, सोया मिल्क आदि। इसके अलावा जमीन के भीतर उगने वाली सब्जियों जैसे आलू, गाजर, मूली, शलजम, चुकंदर आदि में भी विटामिन बी 12 आंशिक रूप से पाया जाता है।

रशिम खंगारोत
कला संकाय, द्वितीय वर्ष



पुस्तकालयों में ई-संसाधनों का महत्व

इंटरनेट के आगमन से ग्रंथालयों के कार्यों में तथा अपने पाठकों को सेवाएँ प्रदान करने में बहुत अधिक परिवर्तन आया हैं, वर्तमान में ग्रंथालय ई-रूप में पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, शोध ग्रंथ एवं शोध प्रबंध के इन प्रारूपों के संग्रह शामिल कर रहे हैं। यह उपयोक्ताओं के सूचना जानने के व्यवहार में उपयोगी होती है। क्योंकि यह बटन दबाते ही सभी सूचनाएँ प्राप्त हो जाती हैं। ई-संसाधन ऐसी सामग्री है, जिसमें विषय वस्तु तक पहुँचने के लिये कंप्यूटर के माध्यम की आवश्यकता होती है। ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों संसाधन जैसे सी डी-रोम ई-संसाधनों के अंतर्गत आते हैं। इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को ऑनलाइन सूचना संसाधनों के नाम से भी जाना जाता है, इसके अंतर्गत ग्रंथपरक डाटाबेस, इलेक्ट्रॉनिक संदर्भ पुस्तक, समग्र पाठ्य पुस्तकों के लिए सर्च इंजन एवं डेटा के डिजिटल संग्रह शामिल हैं। इनमें वह डिजिटल सामग्री शामिल है जिसमें उन्हें सीधे कंप्यूटर पर ही उत्पादित किया है, उदाहरण के लिए, ई-पत्रिकाएँ, ई-डाटाबेस। इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों तक पहुँच इंटरनेट के द्वारा मुफ्त हो सकती है या शुल्क पर भी उपलब्ध हो सकती है। ई-संसाधनों के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख निम्नलिखित है:-

ई-सामयिकियां, ई-पुस्तकें, ई-डाटाबेस, ई-प्रतिवेदन, ई-शोधग्रंथ एवं लघु शोध प्रबंध, संस्थागत् संग्रह स्थल।

ई-सामयिकियां:- ई-सामयिकी ऐसा प्रकाशन जिसे सामान्यतः इंटरनेट पर इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों में प्रकाशित किया जाता है। एक सामयिक प्रकाशन से तात्पर्य है ऐसा प्रकाशन जिसकी निश्चित अवधि होती है, ये सप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, तिमाही, वार्षिक आदि अवधि में प्रकाशित हो सकते हैं।

ई-पुस्तकें :- ई-पुस्तकें को निशुल्क या वार्षिक शुल्क साहित, लाइसेंस पर या प्रत्येक उपयोग के लिए भुगतान पर, प्राप्त किया जा सकता है। जिसे इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल पुस्तक के नाम से भी जाना जाता है, एक पाठ्य-वस्तु टेक्स्ट तथा चित्रों पर आधारित, डिजिटल प्रारूप में प्रकाशन है। मानक मुद्रित पुस्तकों के समान ही ई-पुस्तकें डिजिटल रूप में मानक पुस्तक हैं। ई-पुस्तकें अनेक प्रारूपों में उपलब्ध हैं। कुछ को पूर्ण रूप से डाउनलोड कर ऑफलाइन पढ़ सकते हैं, जबकि अन्य को केवल इंटरनेट से जुड़ने के बाद ऑनलाइन पर पढ़ सकते हैं। ई-डाटाबेस 'डाटाबेस' शब्द का प्रयोग अभिलेखों के ऐसे संग्रह के लिए किया जाता है जोकि सांख्यिकी, पाठ्य या चित्रों पर आधारित डाटा हो सकते हैं। यदि इसे इंटरनेट द्वारा अभिगम करते हैं, तो इसे ऑनलाइन डाटाबेस कहा जाता है। इंटरनेट के आगमन से पूर्व, ये ऑनलाइन डाटाबेस सीडी रोम डाटाबेस रूप में उपलब्ध थे एक जर्नल डाटाबेस सामयिकी लेखों का संग्रह है जिसे व्यक्तिगत अभिलेखों में व्यवस्थित किया गया है और इन्हें खोजा भी जा सकता है। डाटाबेस बिल्लियोग्राफि या पूर्ण पाठ्य हो सकते हैं। वागमयात्मक डाटाबेस संदर्भ ग्रंथपरक अभिलेखों का डाटाबेस है, यह प्रकाशित साहित्य के संदर्भों का व्यवस्थित डिजिटल (अंकीय) संग्रह है। यह सामान्यतः साधारण प्रकृति है या विशिष्ट विषय क्षेत्र से हो सकते हैं, जो डाटाबेस पत्रिका लेखों, पुस्तक पाठ, सम्मेलन लेख आदि के पूर्ण पाठ्य उपलब्ध कराते हैं उन्हें पूर्ण पाठ्य डाटाबेस कहते हैं। पूर्ण

पाठ्य अभिगम से अभिप्राय यह है कि उपभोक्ता पूर्ण पाठ्य लेखों को पढ़, सुरक्षित या मुद्रित कर सकते हैं। पूर्ण पाठ्य लेख एच.टी.एम.एल. या पी.डी.एफ. प्रारूप में हो सकते हैं।

ई-प्रतिवेदन :- प्रतिवेदन एक ऐसा अभिलेख है जिसमें वर्णनात्मक, आरेखकीय या सारणीय (प्रारूप में सूचना शामिल होती है इसे आवश्यकतानुसार तदर्थ, सावधिक या नियमित आधार पर तैयार किया जाता है। प्रतिवेदन किसी विशिष्ट अवधि या घटना या विषय का वर्णन हो सकता है। इसे मौखिक या लिखित रूप से सार्वजनिक कर सकते हैं। जो प्रतिवेदन डिजिटल रूप में उपलब्ध होता है, उसे ई-प्रतिवेदन नाम से भी जाना जाता है।

ई-शोधग्रंथ एवं लघु शोध प्रबंध :- शोध प्रबंध या शोध लेख शैक्षणिक उपाधि के लिए उम्मीदवार के समर्थन में जमा किया गया एक अभिलेख है। यह विद्यार्थी द्वारा किये गए कार्य या शोध तथा उसके परिणामों या उपलब्धियों को प्रस्तुत करता है। विश्वविद्यालयों/संस्थाओं में अपने शोध प्रबंध एवं शोध लेखों को मुद्रित रूप में प्रस्तुत करते हैं। शोध ग्रंथ व शोध लेख के डिजिटल रूप को ई-शोध-ग्रंथ व शोध लेख के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय विश्वविद्यालयों में एम.फिल. तथा पी.एच.डी. के शोध छात्रों को अपने शोधग्रंथ व शोध लेखों की डिजिटल व सॉफ्ट प्रतियों को जमा कराना होता है। वर्तमान में ग्रंथालय उन शोध ग्रंथों व शोध लेखों का डिजिटलाइजेशन करके इन्हें इंटरनेट पर अभिगम योग्य बना रहे हैं।

डॉ. कपिल सिंह हाड़ा
पुस्तकालय विज्ञान विभाग

सोशल मीडिया का युवा पीढ़ी पर प्रभाव

आज इंटरनेट का उपयोग करना पहले से कहीं

आसान है और इसी वजह से हर क्षेत्र में इंटरनेट का उपयोग होने लगा है। पूरी दुनिया मोबाइल एवं लैपटॉप में सिमट कर रह गयी है। नित नए एप्स, वेबसाइट एवं गैजेट्स ने न सिर्फ हमारे दैनिक क्रियाकलापों को आसान किया है, अपितु ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे इन तकनीकों ने हमें अपना गुलाम बना लिया है और हमें इनके प्रयोग की एक ऐसी लत लग गयी है कि अगर कुछ समय के लिए इन गैजेट्स का उपयोग नहीं करने पर हम विचलित होने लगते हैं। 'अति सर्वत्र वर्ज्यते' अर्थात् हर चीज की अति बुरी होती है, आज हम सभी इंटरनेट के जिस मायाजाल में उलझे हुए हैं उससे हमारी वर्तमान और भावी पीढ़ी का भविष्य खतरे में प्रतीत हो रहा है। आज के युवा सोशल नेटवर्किंग के मायाजाल में कुछ ऐसे फंसे हुए हैं कि उनके लिए स्टेट्स अपडेट, पोस्ट्स, लाइक्स, मैसेज फॉरवर्ड, शेयर, चैटिंग के परे कोई जीवन है ही नहीं।

सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका भी अदा करता है जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई कार्य हुए हैं जिनसे कि लोकतंत्र को समृद्ध बनाने, देश की एकता, अखंडता एवं समाजवादी गुणों में अभिवृद्धि हुई है, उदाहरण के लिए इण्डिया अर्गेस्ट करप्शन देश में फैले भ्रष्टाचार के खिलाफ एक आंदोलन था जिसे सोशल मीडिया ने एक नये आयाम के साथ अन्ना हजारे को समर्थन देकर प्रभावशाली बनाया। सोशल मीडिया के माध्यम से ही निर्भया को न्याय दिलाने के लिए ही विशाल संख्या में युवा सङ्क पर उतरे जिससे सरकार ने मजबूर होकर नया कानून बनाया।

सोशल मीडिया ने पहचान की चोरी, विवरण की चोरी, साइबर धोखाधड़ी, हैकिंग और वायरस के हमलों की संभावना को बढ़ावा दिया है। यदि आप ने अपना पता, फोन नंबर कार्यस्थल और अपने परिवार की जानकारी को किसी भी सोशल मीडिया की साइट पर अपडेट किया है, तो आपने अपनी गोपनीयता को खो दिया है। आमतौर पर हम फेसबुक पर दिन-प्रतिदिन नई-नई तस्वीरें डालते रहते हैं। ऐसा करते समय हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि चित्र और अन्य जानकारियों का दुरुपयोग किया जा सकता है। इसीलिए सोशल मीडिया कर कार्यपद्धति और इसके इस्तेमाल करने के तरीके को समझना जरूरी है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग भारी मुसीबत ला सकता है। इसे रोकने के लिए आपको फेसबुक, ट्वीटर, युट्यूब जैसे सोशल मीडिया पर अपना समय सीमित करना होगा। आराम करने और बाहर जाने के लिए समय निकालें। इंटरनेट केवल सोशल मीडिया के उपयोग के लिए ही नहीं है। यह सूचना का एक भंडार गृह है। इसीलिए इसका उपयोग बुद्धिमानी से करें।

रवि सोनी
कम्प्यूटर विज्ञान विभाग



बचपन का जमाना



बचपन का जमाना था,
खुशियों का खजाना था।
चाहत चाँद को पाने की,
दिल तितली का दिवाना था।
खबर ना थी कुछ सुबह की,
न शाम का ठिकाना था।
थक हार कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना जरूरी था।
दादी की कहानियाँ होती थी,
पर्सीदों का फ़ल्फ़लना होता था।
बारीश में कागज की कश्ती से,
हर मौसम सुहाना होता था।
हर खेल में साथी होता था,
हर रिश्ते को निभाना होता था।
पापा की ओर डॉट गलतियों पर,
मम्मी का मारना होता था।
रोने की वजह ना होती थी,
ना हँसने का बहाना होता था।
अब नहीं रही ओर जिंदगी,
जैसा बचपन का जमाना होता था।

निधि गुप्ता
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष

है जो बड़ा, उस ख्वाब से, जो पलकों में छिप जाता है,
देता है सुकून कुछ पल, फिर अपनी तन्हाई छोड़ जाता है।
इबादत है वो मंजिल, रास्ते उसके कुरान हैं,
पाना है उस तख्त को जिसमें सफलता और सम्मान है।
है दिन बड़ा उस शाम से, सूरज जिसमें ढल जाता है,
है धैर्य बड़ा उस गुमान से, चंद लम्हों में जो टूट जाता है।
हर वक्त है कीमती, हर लम्हा एक पैगाम है,
बीत रहा हर एक पल कुछ आम तो कुछ खास है।
है काम बड़ा उस नाम से चंद पीढ़ियों में जो गूंज जाता है,
है जीत बड़ी उस ख्वाब से, पलकों में जो छुप जाता है।

दिव्या कासट
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष



जीवन एक संगीत

संगीत विषय के बारे में कुछ कहना या लिखना अन्यायपूर्ण होगा, क्योंकि मेरे ये बेतरतीब शब्द इसे इतना न्याय व उपमा नहीं दे पायेंगे। यह तो खुद इतनी सम्पूर्णता और समग्रता लिए है कि इसके बारे में कुछ कहना सूरज को दीया दिखाने समान है। आप इसे पढ़कर इतना नहीं समझ पायेंगे जितना की सुनकर या महसूस कर आनंद की अनुभूति करेंगे। संगीत ही सृष्टि का सार है। हाल ही में नासा द्वारा हुए एक शोध के अनुसार हमारे सौर मंडल से ओउम् की ध्वनि सुनाई पड़ती है।

यहाँ तक की हमारी श्वास का आना जाना भी एक स्वर में और लयबद्ध होता है। जब साधक स्वर में डूबकर गाता है तो निश्चय ही वह अलौकिक आनंद की अनुभूति करता है। स्वयं देवता इस आनंद को प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। इस बात का प्रमाण है कि एक बार नारद जी ने भगवान से पूछा कि- हे प्रभु! आप कहाँ निवास करते हैं? इस पर भगवान ने नारद जी से कहा

नाहं वसामि वैकुंठे योगिनांहृदय न च।

मष्टका यत्र गायंति यत्र तिष्ठामि नारद ॥

अर्थात् ना मैं वैकुंठ में रहता हूँ और न ही योगियों के हृदय में, मैं तो वहीं रहता हूँ जहाँ मेरा भक्त स्वर में डूबकर गाता है।

'जाने बिनु न होय परतीती' अर्थात् बिना जाने विश्वास नहीं होता और बिना विश्वास प्रेम भी नहीं होता तो संगीत को जानने या समझने के लिए हमें संगीत शास्त्र को समझना होगा। सा, रे, ग, म, प, ध, नी, ये

सात स्वरों के समूह का बहुत ही गूढ़ अर्थ है। 'सा' का मतलब है साकार ब्रह्मा जो ब्रह्मा, विष्णु महेश है। फिर 'रे' से ऋषि-मुनि और ऋषि-मुनि जब गाने लगे तो 'ग' से गन्धर्व 'गावहि गन्धर्व गुण प्रवीणा', जब गाने वाले हैं तो सुनने वाले भी होने चाहिए इसलिए 'म' से महिपाल राजा

इन्द्र जिनके यहाँ संगीत होता था और जब राजा है तो प्रजा भी होगी तो 'प'

प्रजा के रूप में प्रकट हुआ। प्रजा है तो उनका सभी वर्ण व जाति के धर्म के लोग भी होंगे तो उनका अपना-अपना धर्म भी होगा, अतः 'ध' से धर्म। 'धारयती इति धर्म' जिसने सारे विश्व को धारण

किया है। उस ईश्वर का हम स्वर द्वारा आह्वान करें तो अंत में क्या मिलेगा? 'नि' से निराकार ब्रह्म। साकार से शुरु हुआ और अंत में निराकार ब्रह्म में संगीत की यात्रा खत्म होती है। जब साधक निराकार ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है और मोक्ष प्राप्ति हो जाती है। संगीत परमात्मा की ओर ले जाने वाली सीढ़ी है। यह अथाह समुद्र है जिसमें साधक रूपी गोताखोर जितनी गहराई में जाएगा उतने मोती चुनकर लाएगा।



भारतीय गायन शैली अपना विशिष्ट स्थान रखती है। भारतीय लोक संगीत से शास्त्रीय संगीत का जन्म हुआ है लोक संगीत समाज का दर्पण है जो समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे-परम्परा, वातावरण, परिवेश से हमारा परिचय करता है। कई

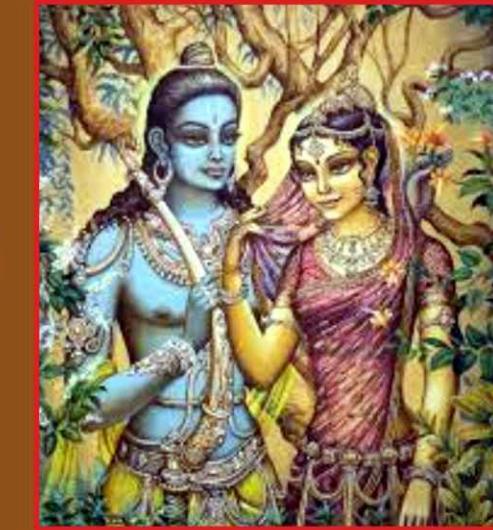
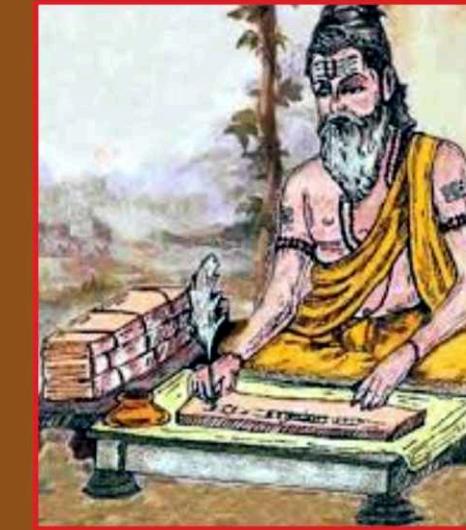
पहाड़ी धुने जो पहाड़ी लोगों द्वारा गायी गई शास्त्रीय संगीत में भी उनका स्थान है। उत्तरी भारत की गायन शैली में तुमरी, भजन, कजरी, चैती, सोहर आदि प्रचलित हैं जो भारतीय समाज का दर्पण प्रस्तुत करते हैं एक ओर ये लोगों की आस्था का भी प्रतीक है। इन सात स्वरों के समूह के सप्तक से बहुत सारी रागों की रचना हुई है। अनगिनत गानों, गज़लों की धुने बनती आयी है।

यह एक प्रयोगात्मक विषय है जिसमें समय के हिसाब से प्रयोग होते आये हैं और आते भी रहेंगे। संगीत सीधा मानवीय भावनाओं से सम्पर्क करता है। यह ऐसी शक्ति है जो जब चाहे हँसा सकती है और रुला भी सकती है।

विज्ञान भी इसके प्रभाव को स्वीकार करने से नहीं चुका है। मनुष्य की हृदय व मस्तिष्क सम्बन्धी बीमारियों का उपचार, जो आज के युग में प्रचलित तरीकों से संभव नहीं है, संभव है तो केवल संगीत द्वारा। लोक परम्परा संगीत पर स्थान व भाषा का असर पड़ता है। हर जगह का अपना-अपना लोक संगीत है लेकिन संगीत चाहे किसी भी जगह का हो 'स्वर' सबसे बड़ी चीज़ है जिसकी कोई भाषा या धर्म नहीं है। गुणी लोग कहते हैं 'स्वर ही ईश्वर है' अर्थात् स्वर में डूबकर जब ईश्वर का आह्वान किया जाए तो एक अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। मैं कृतज्ञ हूँ गुणी लोगों और गुरुओं का आशीर्वाद पाकर जिनके चरणों में रहकर मुझे संगीत रूपी प्रसाद मिल रहा है। जीवन-पर्यन्त तक मेरी यह संगीतमय यात्रा जारी रहेगी और सदैव अपना योगदान देती रहूँगी।

वन्दना जांगिड
कला संकाय, तृतीय वर्ष

रामायण का महत्व



संसार की विभिन्न भाषाओं में जो भावपूर्ण चित्रण है। श्री मद्भाल्मीकि उच्चकोटि के महाकाव्य हैं उनमें महर्षि रामायण प्राचीन आर्य सभ्यता और वाल्मीकि प्रणीत रामायण का स्थान सर्वोच्च है।

श्री राम एक आदर्श मित्र, आदर्श भाई, आदर्श पति और आदर्श सम्राट भी है। लक्ष्मण एक ऐसा आदर्श भाई है जो अपने श्रेष्ठ भ्राता के दुःख और सुख में हानि और लाभ में सदा उनके साथ रहते हैं नैतिक आदर्शों का वर्णन मिलता है। उसका अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

रामायण के सुन्दरकाण्ड को सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है क्योंकि इस काण्ड में महावीर हनुमान के शौर्य और वीरता का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। यह और बाली दो ऐसे पात्र हैं जो आरम्भ में तथ्य हो सकता है परन्तु मेरे विचार में हम फलते और फूलते हैं परन्तु अन्त में अपने किसी भी काण्ड को देखे प्रत्येक काण्ड कार्यों का फल पाते हैं। सीता एक ऐसी आदर्शों और शिक्षाओं से ओत-प्रोत है। नारी रत्न हैं, जो मन, वचन और कर्म से अयोध्या काण्ड में मानव स्वभाव भावनाओं और संघर्षों का कितना मार्मिक और हृदयकारी चित्रण किया है। इस काण्ड में श्री राम की श्रेष्ठता का, एवं नैतिक आदर्शों से युक्त ग्रन्थ नहीं हो सकता है जो श्री राम अथवा सीता के के दुराग्रह का, भाग्य के विरुद्ध लक्ष्मण जी की, सिंहगर्जना का, सीता जी के पतिव्रता का, कौशल्या के गौरव का, सुमित्रा की बुद्धिमानी का, सुग्रीव की मित्रता का और भरत की उदारता का

संसार के किसी भी ग्रन्थ में काव्य और नैतिकता का इतना सुन्दर समावेश नहीं

हुआ है जितना इस पवित्र काव्य में देखने को मिलता है। माता-पिता की आज्ञा का पालन, सत्यवादिता, प्रतिज्ञा परिपालन, दीन-दुर्बल एवं आश्रित संरक्षण, एक पत्नीव्रत, वर्णाश्रम मर्यादा अनुसार आचरण, भ्रातृप्रेम त्याग, उदारता आदि गुणों के चित्रण से यह ग्रन्थ संसार के लिए परम उपकारी बन गया है। यदि वर्तमान समय में इस श्रेष्ठ ग्रन्थ के सद्गुणों या इसके पात्र, चरित्रों के गुणों का अनुसरण वर्तमान पीढ़ी के लोगों द्वारा किया जाये तो समाज के एक आदर्श समाज बनने की परिकल्पना की जा सकती है। क्योंकि वर्तमान समय में समाज में जो बुराईयां, कुरीतियां, अवगुण व्याप्त हैं उन्हें श्री मद्भाल्मीकि जी के श्रेष्ठ ग्रन्थ रामायण के आदर्शों व सद्गुणों का अनुसरण कर दूर किया जा सकता है। समाज को एक आदर्श समाज बनाया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि वाल्मीकि द्वारा रचित ग्रन्थ रामायण एक आदर्श समाज का निर्माण करने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अल्का मेघवंशी

कला संकाय, द्वितीय वर्ष

नौविक सागर परिक्रमा



नौविक सागर परिक्रमा एक समुद्री निर्मला सीतारमण ने भारतीय नौ सेन्य अभियान है इस अभियान के तहत नौकायन पोत तारिणी को रवाना किया। भारतीय नौसेना की महिला अधिकारियों के एक दल द्वारा भारत में निर्मित पाल नौका आई.एन.एस.वी. तारिणी पर सवार होकर विश्व का परिनौसंचालन किया जाना है। यह पहला ऐसा भारतीय अभियान है, जिसमें जलमार्ग द्वारा पूरे विश्व की यात्रा एक ऐसे चालक दल द्वारा की जा रही है, जिसकी सभी सदस्य महिलाएँ हैं। यह अभियान भारत सरकार की नारी शक्ति पर बल देने की नीति को परिलक्षित करते हुए नौकायन गतिविधियों को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण समझा जा रहा है।

नौविक सागर परिक्रमा का शुभारंभ:- 10 सितम्बर 2017 को गोवा के आई.एन.एस. मंडोवी नौका पूल से रक्षा मंत्री



अभियान के दौरान चालक दल गहरे समुद्रों में प्रदूषण की निगरानी और रिपोर्ट करेगा।

साथ ही महासागर नौकायन को बढ़ावा देने के लिए चालक दल विभिन्न बन्दरगाह पड़ावों पर भारतीय मूल के स्थानीय व्यक्तियों से वार्ता करेगा।

पूर्वी के समुद्री अभियान भारतीय नौसेना का महासागर नौकायन अभियान वर्ष 1998 में अभियान समुद्र के साथ प्रारम्भ हुआ था। पहला भारतीय एकल परिनौसंचालन कैप्टन दिलीप डॉडे (सेवानिवृत्त) द्वारा 19 अगस्त, 2009 से 19 मई, 2010 तक भारत में निर्मित पोत आई.एन.एस.वी. महादेव पर सवार होकर गया था।

पहला भारतीय अविराम एकल परिनौसंचालन कमांडर अभिलाष टॉमी दौरान पोत चार बंदरगाहों नामतः फ्रीमेंटल (ऑस्ट्रेलिया), लाइटलेटन (न्यूजीलैंड), पोर्ट रैनले (फॉकलैंड्स) एवं केपटाउन (दक्षिण अफ्रीका) पर रुकेगा।

नौविक सागर परिक्रमा का उद्देश्य

नौविक सागर परिक्रमा का उद्देश्य भारतीय नौ सेना द्वारा देश में महिला सशक्तिकरण और महासागर नौकायन को बढ़ावा देना है।

राष्ट्रीय नीति के अनुरूप महिलाओं को अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने हेतु सशक्त बनाने के लिए अभियान का उद्देश्य विश्व मंच पर नारी शक्ति का प्रदर्शन करना है। साथ ही नौकायन के द्वारा पर्यावरण अनुकूल गैर-परम्परागत नवकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देना है।

इसके अतिरिक्त स्वदेश निर्मित आई.एन.एस.वी. तारिणी पर नौकायन करके मेक इन इण्डिया पहल को प्रदर्शित करना है।



आई.एन.एस.वी. तारिणी

आई.एन.एस.वी. तारिणी स्वदेशी तकनीक से निर्मित 55 फीट, लम्बा एक नौकायन है।

18 फरवरी, 2017 को आई.एन.एस. मंडोवी नौका पूल पर आयोजित एक समारोह में आई.एन.एस.वी. तारिणी को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था। आई.एन.एस.वी. तारिणी परिनौसंचालन अभियान पर जाने वाली दूसरी पाल नौका (पहली आई.एन.एस.वी. महादेव) है।

इस पोत का नामकरण ओडिशा के गंजाम जिले में स्थित तारा-तारिणी मंदिर के नाम पर किया गया है।

उल्लेखनीय है कि तारा तारिणी नाविकों एवं समुद्री व्यापारियों की पालक तथा संरक्षक देवी मानी जाती है और समुद्र में सुरक्षा एवं सफलता के लिए इनकी पूजा की जाती है।

इस पोत को गोवा स्थित में सर्व एक्चेरियस शिपवार्ड प्रा. लिमिटेड द्वारा निर्मित किया गया है।

यह पोत अत्याधुनिक नैविगेशन एवं नवीनतम उपग्रह संचार प्रणालियों से लैस है, जिनके माध्यम से विश्व के किसी भी भाग में होने पर भी इससे सम्पर्क साधा जा सकता है।

आई.एन.एस.वी. तारिणी की कैप्टन लेफिटनेंट कमाण्डर वर्तिका जोशी है और चालक दल में लेफिटनेंट कमाण्डर प्रतिभा जामवाल, पी.स्वाती एवं लेफिटनेंट एस. विजया देवी, बी. ऐश्वर्या तथा पायल गुप्ता शामिल हैं।



निष्कर्ष:- नौविक सागर परिक्रमा अभियान से महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहन मिलने के साथ ही महासागर नौकायन को भी प्रोत्साहन प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त मेक इन इण्डिया पहल एवं नवकरणीय ऊर्जा संसाधन के उपयोग को बढ़ावा मिलेगा।

श्रुति पारीक
कला संकाय, तृतीय वर्ष

रोहिंग्या संकट : मानवता बनाम राष्ट्रवाद



मानवता का अभिप्राय है कि मनुष्य के हितों को ध्यान में रखकर कार्य करना। राष्ट्रहितों को ध्यान में रखकर कार्य करना। भारत के समक्ष यह दुविधा है कि रोहिंग्या संकट के अन्तर्गत मानवता का पक्ष लिया जाये या राष्ट्रवाद का। यह दुविधा म्यांमार तथा बांग्लादेश के साथ भी है। इस समस्या के अन्तर्गत रोहिंग्या समुदाय के समक्ष जीवन के अधिकार का प्रश्न है तो वही उनके प्रवास से शरण देनेवाले देशों के समक्ष राष्ट्रीय हित एवं सुरक्षा का प्रश्न भी खड़ा हो गया है।

कौन है रोहिंग्या एक परिवय

रोहिंग्या म्यांमार के रखाइन प्रांत में इस्लाम धर्म को मानने वाले विशेष समुदाय के लोग हैं जो पूर्व के बंगाल राज्य (बांग्लादेश) के निवासी थे, जिन्हें ब्रिटिश औपनिवेशिक शासनकाल में कृषि में श्रम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु म्यांमार में बसाया गया था। वर्तमान समय में म्यांमार ने इन्हें नागरिकता प्रदान नहीं की है और ना ही बांग्लादेश में वापसी का विकल्प बचा है। रोहिंग्या समुदाय की आर्थिक, सामाजिक स्थिति निम्न होने तथा राजनीति में नगण्य भागीदारी है तथा छोटे-मोटे अपराधों से जु़ु़ाव होने के कारण इन्हें I.S., I.S.I.S. तथा अलकायदा आदि आतंकवादी समूह से सम्बन्धित माना जाता है।

म्यांमार का पक्ष

रोहिंग्या समुदाय की ओर म्यांमार के स्थानीय लोग तथा सरकार का रुख उदारतापूर्ण नहीं है। म्यांमार में रोहिंग्या समुदाय को किसी प्रकार की नागरिकता नहीं दी गई है तथा इन्हें बांग्लादेश से आने के कारण गैर-प्रवासी माना जाता है। म्यांमार में अत्यसंख्यक रोहिंग्या तथा बहुसंख्यक बौद्धों के बीच भी सम्बन्ध तनावपूर्ण हैं। म्यांमार की ओर से रोहिंग्या समुदाय को किसी प्रकार का समर्थन प्राप्त नहीं है।

बांग्लादेश का पक्ष

रोहिंग्या संकट का प्रारम्भ 25 अगस्त, 2017 से हुआ था। इस दौरान 'अरकान रोहिंग्या साल्वेशन आर्मी' (ARSA) एक चरमपंथी संगठन है जिसके द्वारा रखाइन प्रांत की पुलिस चौकियों पर हिंसक कार्यवाही की गई थी। इसलिए यहाँ की सरकार के द्वारा इस संगठन को आतंकी घोषित कर विलयरेस ऑपरेशन



देने हेतु तैयार नहीं है। इस स्थिति में बांग्लादेश सांस्कृतिक एवं भौगोलिक कारणों से एकमात्र विकल्प है जो इस समुदाय के लोगों को शरण दे रहा है। बांग्लादेश में भी संसाधनों की सीमितता है। इस कारण से वह अधिक संख्या में आये रोहिंग्या समुदाय समस्या उत्पन्न कर दी है। बांग्लादेश में सामाजिक द्वंद्व उदारवादी बनाम चरमपंथी काफी अधिक है।

इन परिस्थितियों में बांग्लादेशी सरकार शरणार्थियों को वापस भेजने के लिए अंतर्राष्ट्रीय दबाव तथा वर्तमान शरणार्थियों के भरण-पोषण हेतु अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सहायता की मांग कर रही है।

अंतर्राष्ट्रीय पक्षः

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार रोहिंग्या समुदाय के लोग पश्चिमी म्यांमार के धार्मिक व अल्पसंख्यक लोग हैं तथा इनकी स्थिति दुनिया में सबसे अधिक समाए हुए के समान है। संयुक्त राष्ट्र के द्वारा म्यांमार की रोहिंग्या के विरुद्ध गतिविधि को रोकने के लिए 'स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय फैट काइंडिंग मिशन' का गठन भी किया है। जिसके प्रमुख मारजूकी दारुरमान है लेकिन यह मिशन म्यांमार में अपने पांव जमाने में असफल रहा। अंतर्राष्ट्रीय र्तर पर रोहिंग्या समुदाय के लिए किये जा रहे सहायता के प्रयास नाकामयाब सिद्ध हो रहे हैं।

भारतीय पक्षः-

भारत का रोहिंग्या संकट से किसी भी प्रकार का प्रत्यक्ष सम्बंध नहीं है परन्तु भारत की अंतर्राष्ट्रीय र्तर पर उसकी छवि के कारण भारत का अप्रत्यक्ष रूप से इससे जुड़ाव हो गया है।

भारत में रोहिंग्या संकट को लेकर दो पक्षों के विचार उभरकर सामने आते हैं:-

1. रोहिंग्या को शरणार्थी के अपेक्षा अवैध प्रवासी माना जा रहा है तथा नये रोहिंग्या को शरण देने की बजाय वर्तमान में जो रोहिंग्या भारत में रह रहे हैं उन्हें बाहर किया जाना चाहिए। रोहिंग्या बसंग्लादेश के रास्ते से अवैध रूप में भारत आए हैं। रोहिंग्या का संबंध I.S.I.S. तथा अलकायदा जैसे संगठनों से है तथा यह समुदाय देश की सुरक्षा के लिए खतरा है तथा सरकार का भी यह मानना है कि भारत में रह रहे 40 हजार रोहिंग्या शरणार्थियों को वापस भेजा जाना चाहिए। इनमें से 16 हजार शरणार्थी संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा शरणार्थी पंजीकृत किये गये हैं।
2. भारत में एक दूसरा बौद्धिक वर्ग रोहिंग्या शरणार्थी के पक्ष में हैं। इस वर्ग के अनुसार मानवता को सर्वप्रथम प्राथमिकता दी गई है। इनके अनुसार कुछ लोगों के अपराध से सम्बन्धित होने के कारण सम्पूर्ण समुदाय को सजा नहीं देनी चाहिए। भारत में तिब्बती, बौद्ध, श्रीलंकाई, तमिल एवं पाकिस्तान बांग्लादेश से आए शरणार्थी प्रमुख हैं तो रोहिंग्या शरणार्थियों का विरोध क्यों किया जा रहा है? वर्ष 1991-92 में भारत ने रोहिंग्या शरणार्थियों का स्वागत भी किया था। अतः भारत को वर्तमान में रह रहे शरणार्थियों को बने रहने देना चाहिए साथ ही साथ म्यांमार से आने वाले शरणार्थियों के लिए संरक्षण तथा पुनर्वास के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास करना चाहिए। तर्क यह है कि वर्तमान समय की मांग राष्ट्रवाद से ऊपर उठकर मानवता के संरक्षण की है।

रितु प्रजापत
कला संकाय, तृतीय वर्ष

शिक्षाकों का सम्मान

माँ बाप से भी ऊँचा मान होता है,
भारत में शिक्षकों का सम्मान होता है।
प्यार से डॉट से या कभी इनकार से,
शिष्यों के लिए शिक्षक वरदान होता है।
मिट्टी को हीरा सा कोहिनूर बनाना,
नींव के ईटों में योगदान होता है।
ज्ञान का भण्डार इनके चरणों में यारों,
रोम-रोम इनसे प्रकाश मान होता है।
जीवन अंश मानस चरणों में है अर्पण,
आँख खोल देता, कृपानिधान होता है।
भारत में शिक्षकों का सम्मान होता है।



श्वेता माखिजानी
वाणिज्य संकाय,
तृतीय वर्ष

एक प्रयास जीत का

हर हार एक सबक देती है,
हर हार तेरा जुनून परखती है।
थक के रुक जाना तेरा काम नहीं,
अभी तो तुझे पाने है मुकाम कई।।।
जरूरत है तो सिर्फ जुनून की,
एक नए जोश, एक सुकून की।।।
आसमां छूने का माद्दा है तुझमें,
दुनिया जीतने की अदा है तुझमें।।।
हर उम्मीद की रोशनी है तू,
हर हंसी में घुली चाशनी है तू।
अपनी किस्मत इंसान खुद लिखता है,
तेरे जैसा इंसा हीं दुनिया जीतता है।।।
हर प्रयास मंजिलों तक पहुंचने का हो,
ये एक प्रयास तेरी जीत का हो।।।



तृप्ति अग्रवाल
बी.सी.ए.,
द्वितीय वर्ष



एक प्रेरक कहानी

यह कहानी एक शख्सियत की वास्तविक जीवनी है जिसने वस्तुतः अपने जीवनकाल में बिना किसी राजनीतिक लॉबी की परवाह किये हुये निर्भीक रूप से अपने देशोद्धार हेतु अपनी सेवाएँ दी। जी हाँ, किंजल सिंह, एक निडर, साहसी ईमानदार व निष्ठावान IAS अधिकारी जिनका सिर्फ नाम ही काफी है जो कि हर उस इंसान के दिलों-दिमाग में जोश भर देता है। यह कोई बॉलीवुड नहीं है बल्कि, वास्तविक जीवनी है, सन् 1982 में किंजल के पिता DSP के.पी. सिंह की हत्या हुई उन्ही के एक साथी द्वारा, तब किंजल सिर्फ 6 माह की थी एवं बहन अपनी माँ की कोख में थी। किंजल के पिता के आखिरी शब्द थे मुझे मत मारों मेरे दो छोटे बच्चे हैं। किंजल और उनकी छोटी बहन प्रांजल ने बचपन से ही अपनी शिक्षा को जारी रखने के लिए अथाह संघर्ष किए। अन्ततः किंजल को प्रतिष्ठित लेडी श्री राम कॉलेज में दाखिला मिला जो कि दिल्ली में है। अपने ग्रेजुएशन के पहले सत्र के दौरान किंजल को पता चला की उनकी माँ कैसर से पीड़ित है और वह शीघ्र ही मृत्यु के निकट है तब ही किंजल ने अपनी माँ से वादा किया कि वे दोनों बहने UPSC की परीक्षा को पास करेंगी। इस बात से विभा देवी (माँ) को मानसिक शांति मिली व जीने की उम्मीद भी। कुछ दिन बाद ही

उनकी माँ भी चल बरी, परन्तु किंजल परिस्थिति से भयभीत होकर अपनी माँ को दिये वचन को पूरा करने में सक्षम नहीं थी व ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दिल्ली यूनिवर्सिटी का टॉपर होना और गोल्ड मेडल जीतना, किसी साधारण मनुष्य में इतना विश्वास भी नहीं हो सकता जो कि किंजल ने सच में मुमकिन कर दिखाया था। इसी साहस और जज्बे ने किंजल को IAS और प्रांजल को IRS बना दिया। उनकी दृढ़-संकल्पता ने भारतीय न्यायतंत्र को हिला कर रख दिया। अपने पिता के कातिलों को 31 वर्ष के संघर्ष बाद 5 जून, 2013 को CBI स्पेशल कोर्ट से दण्डित करवाया। किंजल ने यह सिद्ध कर दिया कि बेटियां, बेटों से कम नहीं बल्कि उनसे ज्यादा ही होती हैं। यह कहानी हर भारतीय के लिए प्रेरक है। विज्ञान संकाय, प्रथम वर्ष



सुना है-
सूरज की तरह चमकने
के लिए, सूरज की तरह
जलना पड़ता है।



नक्षत्र वन

नक्षत्र के अनुसार ऊर्जा उत्सर्जित होती है। ज्योतिष विज्ञान के अनुसार 27 नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक के अनुरूप कोई न कोई पेड़ होता है। इनमें नक्षत्र के अनुसार ऊर्जा उत्सर्जित होती है। माना जाता है कि सभी 27 नक्षत्रों पर आधारित पेड़ पौधों की उपस्थिति व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक तौर पर मजबूत बनाते हैं। यहाँ कई सारे नक्षत्र हैं और हर नक्षत्र राशि चक्र हर खगोलीय पिंड से जुड़ा हुआ है। हिन्दू ज्योतिषियों के अनुसार हर नक्षत्र औषधिय, सौंदर्य परक, सामाजिक और आर्थिक मूल्यों वाले वृक्षों से संबंधित है। अपने नक्षत्र के अनुसार वर्णित वृक्ष के सानिध्य में रहने से मनुष्य को अनुकूलता प्राप्त होती है। नक्षत्रानुसार कुछ वृक्षों के नाम इस प्रकार हैं:-

क्र.सं.	नक्षत्र का नाम	वृक्ष का नाम	नक्षत्र देवता
1	अश्विनी	रस वृक्ष	अश्विनी
2	भरणी	वृष वृक्ष	यम
3	कृतिका	उदुबर/गुलर	अग्नि
4	रोहिणी	जामबुल, जामुन	ब्रह्मा
5	मृगाशिरा	खेर	इन्दु
6	आर्द्रा	कृष्ण अगर, अगर	रुद्र
7	पुनर्वसु	वंश, बांस	अदिति
8	पुष्य	अश्वत्थ, पीपर	गुरु
9	आश्लेषा	नागकेसर/नागचम्पा सर्प	
10	मधा	बड़/वट	पितृ, पितर
11	पूर्वाफालुनी	किंशुक, पलाश	भग
12	उत्तरा फालुनी	अक्ष	अर्यमा
13	हस्त	अरिष्ट/रीढ़ा	सूर्य
14	चित्रा	बिल्व, बेल	त्वष्टा
15	स्वती	कौहा, कोह	वायु
16	विशाखा	कपित्थ, कैथ	इन्द्राद्विनि
17	अनुराधा	मौलसरी	मित्र
18	ज्येष्ठा	शालमली/सेवर	इन्द्र
19	मूल	अजर्कण, साल/हेंद	निर्झर्ति
20	पूर्वाषाढ़ा	वेतस, बैत, नरकुल	आप:
21	उ		

तंत्रिका तंत्र का पोषक प्रदाता विटामिन बी कॉम्प्लेक्स



दूध, मक्खन, पिस्ता और दाल में पाया जाता है।

विचार करना चाहिए। विटामिन बी कॉम्प्लेक्स में आठ विटामिन होते हैं। इनको इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. विटामिन बी 1- यह विटामिन गेहूँ, मूँगफली, हरे मटर, संतरे, चावल, हरी सब्जियों के बीजों में पाया जाता है। इस विटामिन की कमी से कब्ज की शिकायत, चक्कर आना, आँखों में अंधेरा छा जाना जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

2. विटामिन बी 2- यह विटामिन पीले रंग का होता है। यह विटामिन सूरज की रोशनी और खाने को अधिक पकाने से समाप्त हो जाता है। यह विटामिन आँखों, नाक और जीभ को स्वरथ रखने के लिए अति आवश्यक है।

3. विटामिन बी 3- यह विटामिन शरीर की वृद्धि में सहायक होता है। यह विटामिन दूध में सबसे ज्यादा पाया जाता है। इसके अलावा यह अंडे की जर्दी, मेवा व अखरोट में भी पाया जाता है।

4. विटामिन बी 5- इस विटामिन की कमी से पैलेगा रोग हो सकता है। यह विटामिन हमारे वजन को नियंत्रण करने में मदद करता है। यह विटामिन

श्वेता शेखावत
कला संकाय, तृतीय वर्ष

माँ

यह शब्द जितना छोटा है,
इसका अर्थ उतना ही बड़ा है।
जिसने अपनी नीन्दे उड़ाकर,
मुझे सुलाया.....।



खुद को जलाकर, मुझे चमकाना सिखाया
रात में हर गम को भुलने को कहकर।
सुबह एक नई उम्मीद के साथ,
जीना सिखाया.....।।

दुनिया से लड़ती गई वो,
पर मुझे हर कदम पर प्यार देना सिखाया।
सबको खुश रखना, परन्तु खुद के हक के लिए
लड़ना सिखाया.....।।

क्या-क्या किया मेरी माँ ने,
यह बताना बहुत ही मुश्किल है,
क्योंकि जिन्दगी में लाना, जिन्दगी से लड़ना।
जिन्दगी देना और मेरे लिए अपने हर सुख में
जगह बनाना सिखाया मेरी माँ ने।
नव जीवन का वरदान दिया मेरी माँ ने।।

दर्शना मोयल
विज्ञान संकाय, तृतीय वर्ष

निजता का अधिकार : मौलिक अधिकार



भारतीय संविधान में व्यक्ति के मौलिक अधिकारों का वर्णन अनुच्छेद (12-35) के अन्तर्गत दिया गया है। इन अनुच्छेदों में से अनुच्छेद 21 जीवन जीने के अधिकार से

सम्बन्धित है। इस अधिकार के तहत एक प्रश्न यह उठता है कि क्या निजता का अधिकार एक मौलिक अधिकार है या नहीं? निजता के अधिकार का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी इच्छानुसार निजी जानकारी किसी अन्य व्यक्ति से साझा कर सकता है अन्यथा नहीं। इस अधिकार में निम्नलिखित बिन्दुओं का समावेश किया जा सकता है-

- इस अधिकार के अनुसार व्यक्ति अपनी निजी जानकारी सिफ अपने पास रख सकता है। वह किसी ओर को बताने के लिए बाध्य नहीं है।
- कोई भी व्यक्ति अपनी निजी जानकारी किसी भी समय प्राप्त कर सकता है।
- कोई भी व्यक्ति अपनी निजी जानकारी में गलती होने पर वह उसे संशोधित करवा सकता है।
- एक व्यक्ति इस अधिकार के तहत यह निर्णय ले सकता है कि उसकी निजी जानकारी किसी अन्य व्यक्ति के पास जाएगी अन्यथा नहीं।

निजता का अधिकार एक मौलिक अधिकार है या नहीं? यह प्रश्न सर्वप्रथम 1895 में अस्तित्व में आया था। इस समय की वकालत के समय यह कहा गया था कि एक व्यक्ति का घर उसका बसेरा होता है उसमें बिना किसी ठोस कारण के या कानूनी रूप से दखल नहीं किया जा सकता है। परन्तु 1895 में निजता के अधिकार को मौलिक अधिकार स्वीकार नहीं किया गया। सन् 1925 में भी यह सवाल एक समिति में उत्पन्न हुआ था। इस समय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी इस समिति के सदस्य थे। सन् 1947 में भीमराव अंबेडकर ने भी निजता के अधिकार का जिक्र किया था तथा इस अधिकार का समर्थन किया था और इसका उल्लंघन किये जाने पर कठोर नियमों का प्रावधान किया जाना चाहिए। सन् 1954 व 1962 में सुप्रीम कोर्ट ने दो फैसले निजता के अधिकार के संदर्भ में आए थे। इन दोनों ही फैसलों में निजता के अधिकार को मौलिक अधिकार स्वीकार नहीं किया गया था।

निजता के अधिकार पर 24 अगस्त, 2017 को सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था। यह फैसला सुप्रीम के जज जे.एस.खेहर सहित 9 जजों के बैच में शामिल थे जिन्होंने फैसला दिया था। 9 जजों की बैच ने फैसला देते हुए बताया कि निजता का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार होगा। यह मामला सुप्रीम कोर्ट इसलिए पहुंचा था क्योंकि आधार कार्ड की वैधानिकता के लिए अनेक याचिकाएँ दायर की जा रही थी। आधार कार्ड के लिए बायोमैट्रिक जानकारी लेना निजता का हनन है। आधार को लागू तो पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की यु.पी.ए. सरकार ने कराया था, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी की



सरकार के दौरान आधार का दायरा बहुत अधिक बढ़ गया है। इससे व्यक्ति की निजता का उल्लंघन होने लगा तथा अनेक योजनाओं जैसे गैस सब्सिडी, फूड सब्सिडी, छात्रवृत्ति, मनरेगा की मजदूरी आदि आधार कार्ड होने पर ही मिलेगी अन्यथा नहीं। निजता के अधिकार में आधार को सम्मिलित किया जाये या नहीं? इस बारे में सुप्रीम कोर्ट ने किसी प्रकार का बयान नहीं दिया है। लेकिन आधार को निजता के अधिकार का उल्लंघन माना गया है क्योंकि सरकार अनेक योजनाओं के लिए आधार सम्बन्धी जानकारी मांगती है जिसका भविष्य में लीक होने का सवाल उठता है तथा निजता का हनन होता है। भारतीय संविधान में नागरिकों की प्राइवेसी को सिक्योर रखने के लिए किसी भी प्रकार की कानून व्यवस्था नहीं की गई है। आधार कार्ड के साथ-साथ डाटा सुरक्षा के लिए कानून बनना चाहिए।

निजता के अधिकार के तहत विशेष कार्यों के लिए निजी जानकारी देनी होगी जैसे - यदि किसी प्रकार का अपराध, पुलिस जाँच के दौरान निजी जानकारी माँगी जाए तो देनी होगी, बैंक अकाउंट खोलने के फोटो देने या अन्य कानूनन जानकारी देने के लिए मना नहीं किया जा सकता है। निजता का उल्लंघन उस स्थिति में होगा जब किसी व्यक्ति द्वारा उसकी निजी जानकारी किसी ऐसी कम्पनी या व्यक्तियों को दे जो निजी जानकारी का दुरुपयोग भी कर सकता है। अतः निजता के अधिकार को अनु. 21 में मौलिक अधिकार का दर्जा प्रदान किया गया है।

किरण प्रजापत
कला संकाय, द्वितीय वर्ष

पापा आ जाओ ना..

आपकी बेटी टूट सी गई है
खुश है पर, रुठ सी गई है,
ये किसी से नहीं संभलती,
हमेशा जिद पर अड़ी रहती,
खुशियाँ कम पड़ गई हैं, आपके जाने से,
पापा आ जाओ ना फिर किसी बहाने से ॥
फिर जान खाऊँगी, फिर सताऊँगी,
थोड़ा रुलाऊँगी, फिर मनाऊँगी,
यूं तो जान से भी ज्यादा प्यार करती हूँ,
पर मज़ा आता है, आपको सताने से,
पापा आ जाओ ना फिर किसी बहाने से ॥
पितृ समर्पित.....



टूट गई है उम्मीदें सारी,
कैसे करूँ अब नये सपनों की तैयारी,
खुश नहीं मैं आपके बिना, अच्छा लगता है
आपको जताने से,
पापा आ जाओ ना फिर किसी बहाने से ॥
रात के अंधेरे में डर सी जाती हूँ,
याद आपकी आये तो मर सी जाती हूँ,
वक्त गुजरता नहीं, हर वक्त मेरा,
सामने रहता है, हर पल चेहरा तेरा,
जानकर भी लगते हो अनजाने से,
पापा आ जाओ ना फिर किसी बहाने से ॥
आँसू आपकी याद में, रोज आते रहते हैं,
एक दिन बीता सुकून से तो, दूसरे दिन
सताते हैं,

वज़ूद को वज़ूद की तलाश है

सुन्दरता का बीज लगाकर, उगाया गया इस संसार में
बचपन की चादर ओढ़ाकर, रखा हमें परिवार में ।

दबी आवाज में पूछा दिल ने, तुझे किसकी आस है,
मैंने भी कह दिया... वज़ूद को वज़ूद की तलाश है ॥

बचपन की चादर जवानी की बेड़ियां बन गई,
मीठे सपनों की दुनिया, बंदिशों में गुम गई।
रोज धोखा खा रही थी, अपनों के प्यार में,
दबी आवाज में पूछा दिल ने, तुझे किस पर विश्वास है,

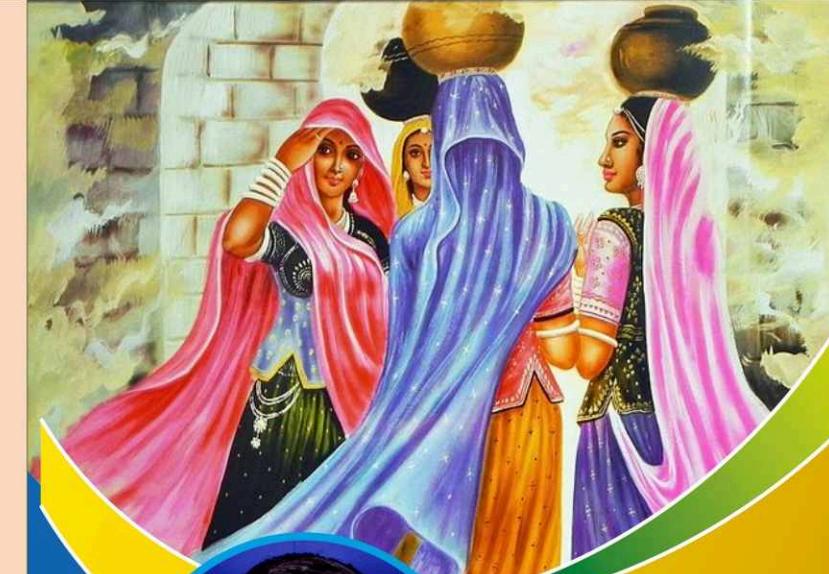
मैंने भी कह दिया.... वज़ूद को वज़ूद की तलाश है ॥
जब कलियाँ खिलकर फूल बनी,
भंवरे पहुँच गये खुशबू की आसार में,
नौंच दिया वो हर एक फूल, और बेच दिया बाजार में ।
तोल लगाया किसके शहद में कितनी मिठास है,
मैंने भी कह दिया.... वज़ूद को वज़ूद की तलाश है ॥
भूल गया वो भंवरा, साथ फूलों के काँटों का जोरथा,
खरोंच दिया उन काँटों ने उसको, कानों में मेरे दर्द का शोरथा,

गुलाब समझ कर छेड़ा जिसको, धूतूरा निकल गया वो ।
मिट्टी बनाकर रखा था जिसको, पत्थर में बदल गया वो,
बादल में छुपा चाँद फिर बोला, मेरे लिए भी रोशनी खास है,

मैंने भी कह दिया..... वज़ूद को वज़ूद की तलाश है ॥

स्वाती जैन,
विज्ञान संकाय, द्वितीय वर्ष

दूर गई है उम्मीदें सारी,
कैसे करूँ अब नये सपनों की तैयारी,
खुश नहीं मैं आपके बिना, अच्छा लगता है
आपको जताने से,
पापा आ जाओ ना फिर किसी बहाने से ॥
फिर जान खाऊँगी, फिर सताऊँगी,
थोड़ा रुलाऊँगी, फिर मनाऊँगी,
यूं तो जान से भी ज्यादा प्यार करती हूँ,
पर मज़ा आता है, आपको सताने से,
पापा आ जाओ ना फिर किसी बहाने से ॥
पितृ समर्पित.....



स्त्री



मैं ममता की छाँव प्रेम रस सभी समर्पित तन मनधन।
शिव के जटा जूट के चन्दा के पूनम की स्निग्धि किरण ॥
मैं शक्ति का बिन्दु सिन्धु हूँ स्वयं शक्ति हूँ सदा अमर।
आशीर्वाद लिया जिसने जीते जीवन के महासागर ॥
मैं ऋषि-मुनियों की जननी हूँ माता हर सम्राट की।
प्रकृति नहीं हूँ महा-माया, अर्धागिनी पुरुष विराट की ॥
जीवन रस से सदा सीधती रक्त कणों का स्पन्दन।
शिव के जटा जूट के चन्दा के पूनम की स्निग्धि किरण ॥
सब अवतारों में प्रकट हुई मेरी आभा तेज प्रखर।
मेरे आंगन में खेले ब्रह्मा, विष्णु, शिव शंकर ॥
मेरी पावन कोख से जन्मे ईसा, मूसा पेगम्बर।
मेरी मेहन्दी की सुगन्ध से महके देहरी हर आंगन घर ॥
मेरे दुर्घट पान से ही बने हृदय की हर धड़कन।
शिव के जटा जूट के चन्दा के पूनम की स्निग्धि किरण ॥
पतिव्रता सावित्री हूँ मैं थम से भी टकराती हूँ।
मंदिर-मंदिर वृन्दा तुलसी हर-घर क्यारी महकाती हूँ।
मैं मीरा खड़ग ताल बजा नाचूँ धुंधरु धमकाती हूँ।
ब्रज की बांसुरी की धुन पर राधा बनकर आती हूँ।
हृदय- हृदय में छलकाती, बरसाती हूँ अमृत धन।
शिव के जटा जूट के चन्दा के पूनम की स्निग्धि किरण ॥

मीनाक्षी शर्मा
विज्ञान संकाय, तृतीय वर्ष



वक्ता का जोर



वक्ता का जोर से निकला वो हर कदम,
आज वक्त ने बदल डाला
कदमों को आज कदमों ने ही कुचल डाला,
दिन की परछाई में सपने हमारे थे,
उन्हें रात की सच्चाई ने बदल डाला,
थका हारा जिंदगी जी रहा था,
रिश्तों का घूंट दूध की तरह पी रहा था,
बस एक दिन टूट गया अपनों का हिसाब,
तो रिश्तों ने रिश्तों को बदल डाला,
कौन अपना कौन पराया,
बहुत देर बाद समझ आया,
तब तक तो मैंने खुद को खुद से अलग कर डाला,
थक गया था जिंदगी से, सोचा थोड़ा आराम कर लैं,
थोड़ी सी आँख क्या लगी जिंदगी को ही निगल
डाला ।

खुशबू सोनी
बी.बी.ए., द्वितीय वर्ष



मासूम बचपन

चलो फिर ढूँढ लाएँ हम, उसी मासूम बचपन को ।
उन्हीं मासूम खुशियों को, उन्हीं रंगीन लम्हों को ।
जहाँ गम का पता न था, जहाँ दुख की समझ न थी ।
जहाँ बस मुस्कुराहट थी, बहारें ही बहारें थी ।
कि जब सावन बरसता था, तो उस कागज की कश्ती को ।
बनाना और डूबो देना, बहुत सच्चा सा लगता था ।
और इस दुनिया का हर चेहरा, बहुत सच्चा सा लगता था ।
अरे! आखिर वही तो असल जिंदगी थी,
चलो फिर ढूँढ लाएँ हम, उसी मासूम बचपन को ।

भावना बालानी
बी.सी.ए., द्वितीय वर्ष

खो जाएगी जब हमारी प्रकृति,
क्या हम ऐसे जी पाएंगे.....?
हो जाएंगे पेड़-पौधे लुप्त,
कोई ना हो पाएगा तृप्त
होगी सुबह विरान सी,
लगेगी हमारी पृथ्वी शमशान सी
क्या हम ऐसे जी पाएंगे.....?
समझ ना पाए क्यों इंसान,
वृक्ष बिना प्रकृति सुनसान
ना बिना हैं जीवन इनके,
फिर क्यों पहुंचाते हो इन्हें नुकसान
क्या हम ऐसे जी पाएंगे.....?
पर्वत काटे, वृक्ष काटे, काटे हैं पूरे वन,
यह अपराध करने के लिए कैसे माने तुम्हारा मन?
वृक्ष बढ़ाते प्रकृति की शान,
तो क्यों प्रकृति का विनाश करें यह मूर्ख इंसान? ||

क्या हम ऐसे जी पाएंगे.....?

जिस प्रकृति ने हमारा बचपन लुभाया,

आज उसी का हमने दिल दुखाया।

बचपन में दी जिसने हमें छाया,

आज उसी का नाश कर हमने उसे नीचे गिराया। ||

खो जाएगी जब हमारी प्रकृति,

क्या हम ऐसे जी पाएंगे.....?

निकिता गुलाबानी
कला संकाय, प्रथम वर्ष



ऐसा मेरा गाँव



सूरज की पहली रोशनी जैसा, बेटे के बाद छोटी बेटी जैसा।

प्यारी माँ की गोदी जैसा, गाँव मेरा है बिल्कुल ऐसा। ||

कोई ठण्डी चलें हवा, प्यार रोग में बनें दवा।

छोटा सा अस्पताल है, ऐसा मेरा गाँव है।

मेरी दादी के राजा-रानी, रोज रात को नर्यों कहानी।

स्कूल में अलग से गान है, ऐसा मेरा गाँव है।

इमली के पेड़ों की ठण्डी छाया, बच्चों को सिखलाती आया।

सुवर्ग से भी बड़ा जहान है, ऐसा मेरा गाँव है।

दादी जी की खट्टी छाछ, आँखें ही हल्की फाँक।

कितनी छोटी दुकान है, ऐसा मेरा गाँव है।

यार दोस्तों की वो मस्ती, ऊँचे पेड़ों पे वो बनती बस्ती।

हर एक बात का अंदाज है, ऐसा मेरा गाँव है।

देर रात तक वों इतनी बातें, तालाबों में कितना नहातें।

कोई अलग सी बात है, ऐसा मेरा गाँव है।

भड़ी-भरी वो टूटी बस, सीटों के लिए भारी कशम कश।

बड़े-बुढ़ों का सम्मान है, ऐसा मेरा गाँव है।

रश्मि आशिया
विज्ञान संकाय, प्रथम वर्ष

नीम, बरगद जैसे बड़े पेड़ थे। इनकी डालियाँ ही हमारे बचपन के घर और झूले थे। सभी सहेलियों में एक ही बात की होड़ थी कि किसका घर सबसे सुन्दर और सबसे ऊँचा है। छोटी को तो घर बनाना आता नहीं था तो बस मैना और बन्दर वाली कहानी की तरह दूसरों के घर तोड़कर करी करायी मेहनत पर पानी फेरा करती थी। हिचकोले ज्यादा होने पर तंदा टूट गई। भला! ये कैसा देश है? दूर-दूर तक कोई घर नहीं, कोई पेड़ नहीं।

तकलीफ तो बस केवल इस बात की थी कि आखिर ऐसी भी कौनसी विपदा आन पड़ी थी कि केवल 16 वर्ष की उम्र में बाबा को हाथ पीले करने की जल्दी थी? दिनभर की गर्मी के बाद शाम को चल रही ठण्डी हवा भी जाने मुझे साथ उड़ा ले चली। वो भी क्या दिन थे? जब हम सब मिलकर कितना खेला करते थे?

सात भाई-बहनों के परिवार में ना जानें कितना सुकून था? बाबा की पुश्तैनी जमीन थी जिस पर साधारण मेहनत से भी धरती सोना उगला करती थी। इसके अलावा बड़े भाई की एक छोटी सी चाय की थड़ी सड़क किनारे थी। जिस पर बरबस ही घर से दूध पहुंचाने की हम सभी भाई बहिनों में होड़ सी मची रहती थी।

गाँव के नज़दीक ही पेड़ों से घिरा क्षेत्र जिसे हम गामणियाँ कहा

करते थे इसमें कई वर्षों पुराने बड़े-बड़े आम, जामुन, इमली,

रात को एक जगह तक सुनसानी जगह पर रहना खतरे से

खाली नहीं होता इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमारी यात्रा शहर में आ गए। यह कहने को शहर था, लेकिन रहन-सहन पुनः प्रारंभ हुई। सूरज एक ओर थका हारा अपने घर की ओर गाँवों जैसा था। नयी जगह, नए लोग मन में संतुष्टि की जगह अस्त हो रहा था। लालिमा युक्त सजे धजे आकाश की हल्की असंतुष्टि आ रही थी। मेरे पिताजी जब मुझे यहाँ छोड़ने आए थे रोशनी में मैंने एक नज़र अपनी हथेली की मेहंदी पर डाली और तब मेरे साथ मेरी तीन पुत्रियाँ जो कि एक दूसरे से दो-तीन एक नज़र आगे बैठे मेरे नवजीवन साथी पर, दिखने में कोई साल बड़ी छोटी थी। नए शहर में आकर बड़ी खुश थी। मैंने विशेषता वाली बात नहीं पर भरा हुआ शरीर, आँखों में साफ अपने पिताजी से एक भैंस इस नए शहर में माँगी ताकि मेरा मन झलकती थकावट और बालों में राजेश खन्ना वाला अन्दाज। यहाँ लग सके। पिताजी उस समय दृढ़ निश्चय वाले पुरुष थे गाड़ी चल रही थी और साथ में मेरी सोच। रात के न जानें किस श्रावण-भाद्रपद के माह में होने वाली तमाम रुकावटों को पहर में गाड़ी रुकी। ढोल-थाली से हो रहे अभिवादन से मेरी पारकर तैरकर मेरे लिए करीबन 500 कि.मी. पैदल चलकर पूरी नींद टूट गई। सात-आठ महिलाओं के समूह ने मुझे भैंस लाए थे। धीरे-धीरे चिड़िया की तरह तिनका-तिनका कर उतरवाकर एक कमरे में ठहराया। थोड़ी देर बात गृह प्रवेश के अपना घर बसा रहे थे।

लिए की जा रही सभी रसमें पूरी कर न जाने, किस घड़ी में जिंदगी की एक सच्चाई है कि जितना परिश्रम खेत-खलिहानों दुबारा आँख लग गई। अगली सुबह सभी महिलाएं, लड़कियाँ में किया जाता है, उसी के अनुरूप फसल का उत्पादन होता है। मुझे घेरे बैठी थी। शायद वो मेरे वस्त्रों व परिधान से आकर्षित मेरे पति भी मेहनत करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे। थी। इन सभी का जितना आकर्षण मेरी तरफ बढ़ता चला जा धीरे-धीरे हम अपनी दुनिया में आगे बढ़ रहे थे। एक दिन न जाने रहा था मेरे तन में न जाने इन सबके प्रति विकर्षण की मात्रा में क्यों मेरे पति हड्डबड़ाहट में गाँव के लिए रवाना हुए। काफी एकाएक वृद्धि होती जा रही थी। समय किस गति से निकलता दिनों के बाद घर लौटने पर पता चला कि गाँव में उनके हक की है, आभास होने का भी पता नहीं चल पाता।

आज शादी के पूरे 3 वर्ष बाद ये बात तो पक्की है कि यहाँ कि धोखे से बेच दिया तथा तिरस्कृत कर घर से बाहर निकाल मथुरा तो तीनों लोकों से ही न्यारी है। पश्चिमी राजस्थान के दिया। कहने को तो इनके दो भाई थे लेकिन परम् शत्रुओं से इस सीमावर्ती क्षेत्र के एक छोटे से इस गाँव में जितनी कमी कम नहीं थे। घर की मर्यादा-संस्कृति की बागड़ार माता-पिता प्राकृतिक सम्पदा की है उससे कहीं ज्यादा यहाँ के लोगों की के हाथों में होती है और जब घर में ही हो रहे अन्याय का प्रतिरोध मानसिकता की है। इससे बात मत करो! उसके घर मत जाओं! माता-पिता नहीं करते हैं तब घर तथा आगामी पीढ़ी में कौटे के यह मत बनाओ! यह मत खाओ! वे अगर आएंगा तो मैं नहीं बीज पनप जाया करते हैं। मैंने अपने पति को जैसे-तैसे जाऊंगा, उसने उस समय वैसा किया था तो अब मैं ऐसा समझा-बुझा के समझाया कि वे भी तो आप ही का परिवार है। करूंगा। जैसे शब्द जो शायद कभी हमारी डिक्षनरी में नहीं थे। यह अत्यधिक मेहनती है लेकिन साथ ही साथ लापरवाह भी है। वो अब दिमाग के किसी न किसी कोने में अपनी उपस्थिति इसलिए इनकी मेहनत फलीभूत नहीं होती है। समय के साथ खटका रहे थे। मेरे इस नए परिवार में मेरे पति के अलावा दोबारा खड़े होकर चलने का साहस कहने दिखलाया। सास-ससुर और दो देवर थे। मेरे पति दिन भर खेतों में मेहनत समय मानों पांव लगाकर उड़ता चला जा रहा था। आज सात का पसीना न बहाकर अप्सरा कम्पनी के नए रेडियो पर पुत्रियों व दो पुत्रों वाला भरा-पूरा परिवार है। बेटियों के बारे में आकाशवाणी की तान में चल रहे गीतों को सुनकर अपना वक्त कहा जाता है कि ये घास-फूस की तरह कब बड़ी हो जाती है, गुजारा करते थे। आमदनी के तौर पर ससुर जी, ऊंटों के पता ही नहीं चलता। धीरे-धीरे पाँच बेटियों की शादी कर उनको व्यापारी थे। उनकी आमदनी को सासु माँ संचित किया करती अपने टिकाने भेज दिया। दोनों पुत्र देश की सेवा हेतु भारतीय थी। यूं तो परिवार में बड़ा नियन्त्रण था परन्तु लाड़-प्यार भी सेना में कार्यरत है। आज जिंदगी में पीछे मुड़कर जब देखती हूँ था। कुछ वर्षों में घर में आयी दो नयी कलियों से पूरा घर तो सोचती हूँ कि इस जिंदगी में क्या कमाया? क्या पाया? क्या किलकारियों से गूँज उठता था। पतिदेव भी अब समय के साथ खोया? ढाणी के एक छोटे से झोपड़ पट्टे से लेकर यहाँ तक परिपक्व हो चले थे। गाँव में न जाने क्यों हमारा घर सदैव पहुँची इस लम्बी यात्रा में कई मील के पत्थर दृष्टि पटल पर उपेक्षित सा रहता था। किसी जमाने में हुई एक छोटी सी घटना अंकित रह गए। सपना बस यह है कि गाँव में हमें हमारा स्थान के कारण गाँव में हमारा इतना लगाव नहीं था। मैंने कभी इस मिलें। भाइयों का भी साथ मिलें। पूरा गाँव खुशहाल मिलें। तरह का माहौल सपने में भी नहीं देखा था। पति अब कमाने हेतु लेकिन सपना तो सपना होता है वों कहाँ अपना होता है? मन का बाहर आने-जाने लगे थे। लेकिन बाकी दोनों भाई घर पर सारे यहीं बोझा है।

दिन निटल्लें ही समय गुजार दिया करते थे। पतिदेव को अब छो

सफाई



आप लोग, मैं आपसे....'' अजय माँ-पापा से मिलने के लिए उतावला हुए जा रहा था जैसे उसे कोई ऐसा खजाना मिला हो जो अमूल्य था। 'आओ-आओ बेटा' किंतु मि.शर्मा ने बीच में कहते हुए कहा 'हम ठीक हैं और तुम कैसे हो। देखो तो सुमन हमारा बेटा कितना बड़ा हो गया है।' 'जी हाँ' मिसेज शर्मा उनका साथ देते हुए 'अब हमें इसके लिए रिश्ते देखने चाहिए।' 'फिर भी देखो बेटा मैं इस देश का समझदार व्यक्ति होने के नाते तुम्हें साफ-साफ कह देता हूँ कि मैं प्रेम विवाह के खिलाफ नहीं हूँ' सुनकर अजय की आँख चमक उठी 'और यदि तुम्हें कोई पसंद है तो हमें बता दो।' मि. शर्मा ने अपनी बात साफ-साफ रखी।

'नीच बेवकूफ लड़की फिर शुरू कर दी तूने अपनी बक-बक, उधर पड़ा कचरा और बिखरी गंदगी कौन साफ करेगा?' पास में खड़ी कमला मि.शर्मा के बेटे अजय से बात कर रही थी अपने पसंदीदा विषय गणित के बारे में। 'तू पढ़ लिखकर क्या करेगी, कौन-सा आर्किटेक्ट बन जाएगी देख तेरा जन्म केवल साफ-सफाई करने के लिए हुआ है।' मि.शर्मा हर रोज की तरह जैसे अब वह उसकी रोजमर्रा की जिंदगी का अटूट हिस्सा बन चुका है। बेचारी कमला का शुक्र अदा करने के बजाए उस पर अपना मालिकाना हक समझते हुए उसे बेइज्जत करना शुरू कर दिया था। मौहल्ले के बाकी सभी लोग जैसे वो स्वच्छता की ओर देश में एकता बढ़ाने के लिए अपने योगदान दे रहे हो मि. शर्मा को उनका नेता चुनकर अपना पूरा-पूरा सहयोग साफ तौर पर दिया। साथ ही उनके पालतू कुत्ते ने भी अपना सम्पूर्ण और साफ-साफ योगदान दिया जो सारा दिन मोहल्ला गंदा करता रहता था। कमला हर रोज की तरह बड़ी सहजता से पलके झुकाकर मौहल्ले वालों को सुना और कहा 'जी बाबूजी अभी किए देती हूँ' तब जाकर बिल्कुल अपने नाम की तरह एकदम सहज और सुलझी हुई नीचे कुल में जन्मी एक सुंदर व सुशील लड़की थी, किंतु इस समाज में उसकी सुशीलता व सुंदरता का कोई खास मौल न था। कमला को पढ़ने का बहुत शौक था। उसकी रुचि गणित में अधिक थी किंतु आर्थिक रूप से स्थिति खराब होने के कारण मौहल्ले में सफाई का काम किया करती थी।

कमला की माँ ने खुद को किसमत के हवाले ना करते हुए अपनी बेटी का उसकी रुचि के विषय में भविष्य बनाना चाहा। उस बात को पूरे 10 साल बीत चुके थे जब कमला और उसकी माँ ने यह शहर छोड़ा था।

मि. शर्मा आज भी लोगों को सफाई पर भाषण ही दिया करते थे किंतु अकेले तब उनका पालतू कुत्ता नहीं रहा। पूरा मौहल्ला भी अब उनकी इस आदत का आदि हो चुका था। मि. शर्मा सफाई के नाम पर केवल भाषण ही देते थे बाकि तो सफाई के नाम पर उन्हें केवल अपनी बात साफ-साफ सुनाना व दूसरों की बात साफ-साफ ना सुनना यही आता। खैर उस दिन मि. शर्मा का बेटा अजय अब पूरे 23 वर्ष का हो चुका था और बड़े शहर से आर्किटेक्ट की पढ़ाई करके, उसी में बिज़नेस शुरू करने के लिए लौटने वाला था।

शाम के चार बजे थे अजय घर लौटा ''माँ-पापा प्रणाम कैसे हैं रत्नांक

मि. शर्मा ने साफ-साफ शब्दों में उसे घर की बहु बनाने से इंकार कर दिया वे नहीं चाहते थे कि उनका आर्किटेक्ट व बिज़नेस मैन बेटा एक नीच कुल की लड़की से शादी करे और उसे अपनी रोजमर्रा का हिस्सा बनाए किंतु प्रेम को आज तक कौनसे बंधन रोक पाए थे। अजय ने भी साफ-साफ कह दिया कि यदि वह किसी से विवाह करेगा तो कमला से अन्यथा नहीं। बेटे के मोह के आगे क्या कुछ टिका है जो यह फैसला टिकता। 'जी आइये, आपका बहुत-बहुत स्वागत है' मि. एंड मिसेज शर्मा शादी में आए मेहमानों का स्वागत कर रहे हैं (जो उनकी बिरादरी के लिए साफ-साफ धब्बा मालूम हो रही थी) पर चर्चा कर रहे हैं या यूँ कहें कि बातें बना रहे हैं।

'हा-हा-हा जी आप कैसी बातें कर रहे हैं प्लीज़ आइये ना आइये' शब्दों में मिठास और सफाई लिए किंतु हृदय में नाराज़गी और गंदगी लिए अब भी हँसकर मेहमानों का स्वागत कर रहे हैं। उनकी हँसी थोड़ी मायूस मालूम हो रही है।

दुल्हन सज-संवरकर मंडप पर पहुँचती है और तभी 'आ-हा-आइ' करते हुए मि. शर्मा धरती पर गिर पड़ते हैं। 'दिल का दौरा मालूम होता है।' यकायक इकट्ठी हुई भीड़ ने अपना साफ-साफ निर्णय दिया। सुनकर अजय दौड़ा आया 'पास पा 55' और हड्डबड़ाहट में चिंता के कारण उसे कुछ ना सूझा किंतु कमला चूंकि समझदार व शिक्षित है अपनी समझदारी और सहजता से काम लेते हुए 'अजय तुम बिल्कुल चिंता मत करो कुछ नहीं होगा अंकल को मैंने डॉक्टर को फोन कर दिया है, वे आते ही होंगे' अजय को संभालते हुए कहा 'आंटी संभालिए खुद को' कमला ने बेहोश होती सुमन से कहा और जो बन पड़ा किया। डॉक्टर साहब आए और इसे केवल छाती का दर्द बताते हुए दवा लिख गए।

जब मि. शर्मा को होश आया तब छाती के दर्द का तो पता नहीं लेकिन उन्हें दो बाते ऐसी पता चली जिससे उनका रोजमर्रा का एक बार फिर से हिस्सा बनने को तैयार है लेकिन इस बार साफ और नए तौर पर। पहली तो यह कि उनकी जान आज कमला की वजह से बच पाई है और दूसरी यह कि उनका आर्किटेक्ट बेटा जो बिज़नेस शुरू करने जा रहा है उसमें आधे से ज्यादा हाथ उनकी समझदार आर्किटेक्ट बहु का है।

आफरीन खान, कला संकाय, द्वितीय वर्ष

व्यावसायिक क्षेत्र :- सेन ने अपने कैरियर की शुरुआत एक शिक्षक और अनुसंधान विद्वान के तौर पर अर्थशास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय से किया। 1960 और 1961 के बीच सेन संयुक्त राज्य अमेरिका में मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में एक विजिटिंग प्रोफेसर थे, जहाँ उन्हें पॉल सैमुल्सन, रॉबर्ट सोलो, फ्रैंको मोडिलिनी और नॉबर्ट वीनर के बारे में पता चला। वे यू.सी.- बर्कले और कॉर्नेल में भी विजिटिंग प्रोफेसर थे।



महान् अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन

जन्म : 3 नवम्बर, 1933,

शांति निकेतन, कोलकाता

कार्यक्षेत्र : अर्थशास्त्री, प्राध्यापक

शिक्षण संस्थान : प्रेसीडेंसी कॉलेज

कॉलकाता, ट्रिनीटी कॉलेज कैम्ब्रिज

पुरस्कार : भारत रत्न, नोबेल पुरस्कार

अमर्त्य सेन एक भारतीय अर्थशास्त्री और दार्शनिक है। अर्थशास्त्र में अनेक कार्यों के लिए सन् 1998 में उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया, सन् 1999 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से भी सम्मानित किया गया। प्रोफेसर अमर्त्य सेन 1970 के दशक से ही यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। सन् 2015 में ब्रिटेन के रॉयल अकेडमी ने उन्हें प्रथम चाल्स्टन इ.एफ.जी. जॉन मेनार्ड कीन्स पुरस्कार से सम्मानित किया। वर्तमान में वे हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर हैं। उन्होंने अकाल में भोजन की व्यवस्था के लिए अपनी थोरी दी। वह पहले भारतीय थे जिन्हें अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार मिला। पिछले चालीस बरसों में तीस से अधिक भाषाओं में उनकी पुस्तकें छप चुकी हैं।

जीवन :- उनका जन्म कोलकाता में शांति निकेतन में कायरथ परिवार में हुआ था, जहाँ उनके नाना क्षिति मोहन सेन शिक्षक थे। उनके पिता आशुतोष सेन ढाका विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र पढ़ाते थे। कोलकाता स्थित शांति निकेतन और प्रेसीडेंसी कॉलेज से पढ़ाई पूर्ण करने के बाद उन्होंने कैम्ब्रिज के ट्रिनीटी कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की। अपने जीवन के कुछ वर्ष उन्होंने मांडले (बर्मा) में भी बिताए और इनकी प्रारम्भिक शिक्षा ढाका में हुई। उन्हें वर्ष 1998 और 1999 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उनका 1999 नामकरण रवीन्द्रनाथ टैगोर ने नामकरण अमर्त्य (बंगाली अमर्त्य Omorto, lit 'अमर') किया।

- नारीजाति को बल प्रदान करने पर हम उस भविष्य को हासिल कर सकते हैं जो हम चाहते हैं।
- दिरिद्रता मानव को सिर्फ अपनी आर्थिक जरूरतें पूरी करने से नहीं रोकती है वह एक इन्सान को अपनी वास्तविक प्रतिभा अनुसार प्रदर्शन करने से भी रोक देती है।
- मावनजाति के विकास में निवेश किए बिना किसी भी अर्थतन्त्र का उदय संभव नहीं है।



रितिका प्रजापत
कला संकाय, द्वितीय वर्ष

कार्य प्रबन्धन



सभी को अनुभव है कि हम उस दिन सबसे अधिक संतुष्ट रहते हैं, जिस दिन हमने सबसे अधिक काम निपटा ए हो या ये कहिए कि जिस दिन हमने अपना समय अच्छे से उपयोग किया हो। वैसे हम जितनी भी कोशिश कर ले कुछ दिन ऐसे चले ही जाते हैं जिस दिन हमारा समय व्यर्थ हो जाता है पर ज्यादातर मौकों पर हम समय का उपयोग कर सकते हैं और ऐसा करने के दो तरीके हमारी बहुत मदद कर सकते हैं।

1. कार्य सूची बनाएँ
2. समय प्रबन्धन मैट्रिक्स

इन उपायों के बारे में बड़ी-बड़ी संस्थानों में कई उच्च स्तर पर पढ़ाया जाता है। यहाँ तक की नौकरी के दौरान भी कोई ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया जाता है तो इन तरीकों के बारे में जरुर बताया जाता है। इन तरीकों को हमें अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में उपयोग करना चाहिए।

कार्य सूची बनाएँ :

यह ऐसी सूची है जिसमें आपको क्या-क्या कार्य करने हैं वो लिख लिए जाते हैं। जब आपके पास बहुत सारे कार्य हो तो ये बेहद कारगार साबित होती है। इसमें कोई भी विन्दु छूटने का डर नहीं रहता है। एक बार सूची तैयार हो जाने के बाद हमें पता होता है कि आज क्या-क्या करना है और दिन के अंत में हमारा संतुष्टि स्तर उतना अधिक होगा जितना अधिक कार्य हम पूरा कर पाएँगे। कार्य पूरा करने के साथ-साथ मैं भी ध्यान देना है कि जरुरी काम रह ना जाए और यहीं पर समय प्रबन्धन मैट्रिक्स का प्रयोग होता है। इसकी अवधारणा को Stephen R. Covey ने अपनी किताब The seven habits of highly effective people से लोकप्रिय किया था।

समय प्रबन्धन मैट्रिक्स :-

अत्यंत आवश्यक	आवश्यक नहीं
महत्वपूर्ण	1
अमहत्वपूर्ण	3
4	

यहाँ चार समूह हैं:

1. अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण- ऐसे कार्यों को तुरंत करना होता है।
2. महत्वपूर्ण पर अत्यंत आवश्यक नहीं- ऐसे कार्य को करना



जीवन एक संघर्ष

संघर्ष की चक्री चलती है
मेहनत का आटा पिसता है
सफलता की रोटी पकती है
और अपना सितारा चमकता है।



सहारों का उजाला हो कितना
खुशियों तक ही वो टिकता है,
मजबूरियों के फिर अंधेरों में
हिम्मत का शोला दहकता है।
मंजिल हो जिसको प्यारी
वो राहों में न कभी अटकता है,
भूल जाए जो लक्ष्य कभी
वे सारा जीवन भटकता है।

है गर्म हवाओं का डर उसको
जो मखमल में ही पलता है,
उसे अंगारों का भय क्या होगा
जो काटों पर ही चलता है।

स्वाभिमान जो दिल में हो
ईमान न फिर ये खिसकता है,
न राजा रहे, न रंक रहे
यह वक्त भी कहाँ टिकता है।

बैसाखियाँ छोड़ बहानों की
जो हौसलों से ही चलता है,
होता अलग वो दुनिया से
इतिहास वही फिर रचता है।

माहिन खान
कला संकाय, तृतीय वर्ष

रिवलती कलियाँ

रंग-बिरंगी खिलती कलियाँ,
गूँजे भंवरे उड़ती तितलियाँ,
सूर्य-किरणें अब फैल गई,
कलियों का घूँघट खोल गई,
कली-कली को देख रही,
देख-देख कर हँस रही,
मरत पवन का झाँका आया,
मीठे सुर में गीत सुनाया,

डाली-डाली लगी लहराने,
क्या मरती भी लगी छाने,
देख-देख मन लुभाया,
कली-कली का तन इतराया,
कितनी कलियाँ एक बगीचा,
माली ने सब को है सींचा,
सींच-सींच कर बड़ा किया,
कलियों ने मन हर लिया,

प्रकृति

ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है मुझसे,
ये कान के पास से गुजरती हवाओं की सरसराहट,
ये पेड़ों पर फुदकते चिड़ियों की चहचहाहट,
ये समुन्दर की लहरों का शोर, ये बारिश में नाचते मोर,
कुछ कहना चाहती है मुझसे।

ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है मुझसे
ये चांदनी रात, ये तारों की बरसात
ये खिले हुए सुन्दर फूल, ये उड़ती हुई धूल
कुछ कहना चाहती है मुझसे।

ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है मुझसे
ये नदियों की कलकल, ये मौसम की हलचल
ये पर्वत की चोटियाँ, ये झींगुर की सीटियाँ
कुछ कहना चाहती है मुझसे।

ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है मुझसे...।



रेखा गौरा
कला संकाय, तृतीय वर्ष



रत्नांक

व्यवस्था परिवर्तन का समय



व्यवस्था परिवर्तन का समय आ गया
भ्रष्टाचार पूरी तरह छा गया।
मुनाफाखोरी की बीमारी लगी सभी को
महंगाई से जनता त्रस्त हो गई तभी तो।
न्याय मिलने में देरी हो रही है
राष्ट्रीय सम्पत्ति चोरी हो रही है।
व्यवस्था परिवर्तन का समय आ गया
भ्रष्टाचार पूरी तरह छा गया।
सड़कों का हाल बेहाल है
दूर-दूर तक न कोई अस्पताल है
सरकार आँखें मुंदे बैठी है।
भ्रष्टाचार पूरी तरह छा गया।

नौकरशाही सब पर भारी है।
हर एक को रिश्वत खोरी की बीमारी है।
भ्रष्ट लोगों के खिलाफ जो आवाज उठाता है।
बहुत जल्दी ही उस आवाज को दबा दिया जाता है।
व्यवस्था परिवर्तन का समय आ गया
भ्रष्टाचार पूरी तरह छा गया।

नाजमीन बानो

कला संकाय, तृतीय वर्ष



रक्तदान महादान

वर्ष 2008 की बात है, मेरे पिताजी के साथ सड़क दुर्घटना हो गई थी। जिसके कारण उनके सिर पर गहरी चोट आई थी। उस वक्त काफी खून बह गया था। चिकित्सकों ने खून चढ़ाने की सलाह दी थी। उस समय मुझे मेरे पिताजी के लिए खून कहीं भी नहीं मिल पा रहा था। उस दिन मुझे एहसास हुआ कि रक्तदान की क्या महत्ता है। तभी मुझे लगा की ये दुर्घटना किसी के भी साथ हो सकती है। रक्तदान की महत्ता समझने के लिए किसी अपने पर कुछ गुजरने का इंतजार क्यों किया जाए। ऐसा दान जिसको करने पर अपनी तरफ से कुछ खर्च ना हो, बल्कि उसका फायदा ही हो, तो उसे अपना लेना चाहिए।

वैसे हमारे परिवारों की मानसिकता ऐसी होती है कि घर में ही किसी सदस्य को रक्त की आवश्यकता होने पर भी घर के अन्य सदस्य डर के मारे रक्तदान नहीं करते हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि, इस मानसिकता को तोड़े और रक्तदान करें।

रक्तदान के फायदे-

दरभंगा, बिहार के डॉ, अजय कुमार लाल दास के अनुसार रक्तदान करने पर निम्नांकित फायदे होते हैं:-

- **जिंदगी की रक्षा** - हॉस्पिटल में कई लोगों को जान बचाने के लिए क्यों

तुरंत रक्त की आवश्यता होती है ऐसे में हमारे द्वारा दिया गया रक्त किसी की जान बचा सकता है, किसी की जान बचाना हमें गर्व की अनुभूति देगा।

- **हमारे इम्यून सिस्टम को रिफ्रेश करता है**- रक्तदान करने से हमारे सेल काउंट कम हो जाते हैं जिसके कारण से हमारा शरीर नए सेल बनाने लगता है इससे हमारे पूरे शरीर में नई ऊर्जा का संचार होता है। लोयोला यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर के डॉ. फिलिप डीक्रिस्टोफर के अनुसार रक्तदाताओं में हार्ट अटैक तथा कैंसर होने की संभावना भी कम हो जाती है। इस प्रकार रक्तदान स्वस्थ जीवन का आधार बन सकता है।



शत्रुंजय धूपिया
कम्प्यूटर विज्ञान विभाग



37

संघर्ष एक अवधारणा

मानव का इतिहास संघर्ष एवं सहयोग का इतिहास रहा है। मनुष्य अपने हितों की पूर्ति के लिए कई बार दूसरे मनुष्यों के साथ सहयोग करता है या उनके साथ संघर्षशील होता है। मनुष्य की यह प्रवृत्ति मनुष्य द्वारा निर्मित संस्थाओं, संगठनों पर भी लागू होती है। कुछ विचारक मनुष्य की इस प्रवृत्ति को शक्ति की खोज कहते हैं। सामान्यतः यह कहा जाता है कि संघर्ष व्यक्तियों या समूहों के मध्य में अपने हितों, मूल्यों, इच्छाओं, आवश्यकताओं एवं विचारों में अंतर से उत्पन्न गम्भीर असहमति या लड़ाई है। इन संघर्षों से युक्त व्यक्तियों या समूहों का उद्देश्य अपने विरोधी को समाप्त करना या निष्प्रभावी बनाना है जिससे वे स्त्रोतों, शक्ति आधारों या प्रतिष्ठा के मानक पर नियंत्रण ना कर सके। संघर्ष के सभी क्षेत्रों में व्याप्त है। चाहे वह व्यक्तिगत समूह हो, परिवार हो, राजनीतिक दल हो या राज्य हो। संघर्ष या हिंसा एक समाज व्यवस्था में धन शक्ति, सम्मान, इज्जत प्रतिष्ठा आदि का विभेदकारी वितरण है।

कोई भी संघर्ष या तनाव तात्त्विक रूप से विनाशकारी नहीं होता है यह इस बात पर निर्भर करता है कि यह अपने अंतिम लक्ष्य को कैसे हासिल करता है जो नैतिक निर्णय के अधीन है। विज्ञान एवं तकनीकी के विकास ने समाज में नई प्रकार की असमानताओं को जन्म दिया है जो कि स्वचालन, अलगाववाद, पीढ़ी अन्तराल मूल्यात्मक संरचना

का विखण्डन या बिखराव एवं अन्य सामाजिक अभिव्यक्तियों के रूप में प्रकट होता है। कुछ लोगों का विश्वास है कि सत्ता समाज में संघर्ष में संलिप्त रहती है। इसलिए शासक एवं शक्ति, कानून एवं नियमों के क्रियान्वयन, व्यवस्था एवं विनिर्माण में एक साथ मिलकर काम नहीं कर सकते हैं। व्यक्ति एवं समाज के संबंध भी हितों के संघर्ष के रूप में जाने जाते हैं। कार्ल मार्क्स का विश्वास है कि एक विशेष प्रकार के समाज में संघर्ष निवारण असम्भव है और केवल संघर्षों को तीव्र करके समाज की पुर्नसंरचना करके ही इनका निवारण संभव हो सकता है।

गंभीर संघर्ष असमान सामाजिक और आर्थिक प्रणाली के गर्भ में होता है जो लंबे समय से बलपूर्वक किए गए शोषण को प्रतिविम्बित करते हैं। आय और अवसरों की बढ़ती हुई असमानताओं के साथ-साथ वैध बनाई गई संरचनाएँ और नीतियाँ संघर्ष के मुख्य स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। संघर्ष के बहुत से प्रकार होते हैं। प्रत्येक प्रकार की अपनी एक विचित्र विशेषता होती है जो कि एक खोज की अवधारणा को अत्यधिक विशेषीकृत बनाती है। जैसे अंतर्व्यक्तिक संघर्ष, कानूनी संघर्ष, औद्योगिक संघर्ष, राज्य के विरुद्ध सत्याग्रह (सविनय अवज्ञा), क्षेत्रीय संघर्ष, साम्प्रदायिक संघर्ष, अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष, सामाजिक संघर्ष, अन्तरराज्य व अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष, अंतरा सामाजिक संघर्ष आदि।

डॉ रुचि मिश्र
राजनीति विज्ञान विभाग



रत्नांक



38

A FAREWELL MESSAGE

The tighter you hold sand in your hands the more it slips away. And if you replace the word 'sand' with 'time' the saying will still be true. Being the former Students' Union President and someone who is really fond of stage presence, in my last three years in this college, I have witnessed a variety of performances and cultural activities. Students in this college find a conducive environment to experiment and think out of the box. Our teachers are always ready to welcome our new ideas, and also help us to challenge and question our long held beliefs.

When I was in my first year my teachers used to describe me as a shy student, but now three years later I've played the roles of hooligans, corrupt politicians, trouble makers and what not. The stage of my college empowered me to be bold

and confident, not only when I'm here but in all the spheres of my life. And I believe that most of my colleagues, can relate to my experience in terms of personal growth and development. Thomas Wolfe, once said, "Culture is the arts, elevated to a set of beliefs." The importance of social and cultural activities is preparing students for real life and strengthening their personal skills. These activities not only help us to identify ourselves with the college, but also assist to develop ourselves in a desired field and also improve skills such as organizational, presentation, leadership and interpersonal communication.

Recently, from 12th-16th January 2018, I was fortunate to represent my college and state at the 22nd National Youth Festival 2018 which was inaugurated by Prime Minister Narendra Modi. My college gave me the opportunity to see myself at a National platform, where

students from all over India were exclusively selected to participate. This occasion gave me a chance to meet national leaders, players and artists in person. Meeting Rajyavardhan Singh Rathore was one highlight of my stay at the fest.

The knowledge, morals, virtues and skills that I've gathered here have shaped me to lead a balanced life, and wherever I'll go, I will take a part of this college, imbibed in me. I thank my Alma Mater, the management, and the teachers for giving me such a prestigious institution to be in.

Anjali Jain
(BCA Part III)



Winners v/s Losers



Winner is always a part of the answer
Loser is always part of the problem
Winners say "Let me do it for you"
Losers say that is not my job
Winner say, "It may be difficult, but it's possible"
Losers say, "It may be possible, but it is difficult"
When winner makes a mistake, she says "I was wrong"
When loser makes a mistake, she says, "It wasn't my fault"
Winners make commitment
Losers make promises
Winners have dream.
Losers have dreams.
Winners say, "I must do something."
Loser says, "Something must be done."
Winners are part of the team.
Losers are apart from team.
Decide your category!

Vidhi Kothiwal
(B.Com. H. Part III)



HOW TO STAY FOREVER HAPPY

Combating depression and anxiety might be difficult in this fast-paced life, but here are a few tips that might help you to understand the key to happiness:

#Look Inside!

Instead of trying to find happiness as if it is something outside of you, you need to search for it within. Understanding your self-worth will give a new perspective to see the world and finding your place in it.

#Focus On Desirable Things

Most of the time, people are unhappy because they keep focusing on negative things. Your emotions, whether happiness or anything else can be controlled by what you focus on and how you interpret those phenomenon in your lives.

#Be Grateful: Value Small Things in Life

Appreciating the little things in life involves focusing our attention on what is pleasurable, nurturing, and sustaining in our lives and away from those events that are annoying, frustrating, or hurtful. It means practicing gratitude for those everyday things that are easy to take for granted. Adopting this outlook won't stop negative events from occurring, but it may help prevent us from over-emphasizing their importance in our lives.

#Don't Seek Happiness, Happily Seek

Be happy in the pursuit of your goals. Instead of trying to acquire materialistic things add fuel to your imagination and dreams which will ultimately enrich your life-experience. Learn to be happy in pursuit of these goals and dreams. After all, is not the purpose of life to be happy? If so, stop pursuing it and just be you.

Rashmi Khangarot
BA Part II



POET'S CORNER

A Heartfelt Rakshabandhan

Something unusual happened today,
An artless vagabond
on my doorsteps did arrive,
I went out to provide him some aid,
He seemed to be in a fragile frame of mind
In a boastful manner he said,
"It's Rakhi today, will you do me a favor
I am in a predicament, living on pavement
And chasing for money since a lot of days
But not a single penny did I earn and
My sister is waiting to tie
The thread of trust and safety on my wrist,"
I agonized to do something;
Becoming amicable,
I ran inside as fast as I could
I opened my wardrobe
And took out my favorite blue top
Giving it to him didn't make me mope
Because there I found a beautiful smile
On his lips again, explaining me
The sacred bond of a thread.

Garima Pareek
B.Com. H. Part I



I wrote this poem on one busy day when I returned home at 1 am in the night after a tough day at work and was completely exhausted since I was, along with my staff, in a law and order duty from early morning, standing continuously for hours without water and food. And even then, I had to prove my worth being a woman in a man's world.

When I cleared India's most prestigious examination and was allotted one of the most sought after services, the Indian Police Service little did I know about the challenges I was to face as a policewoman. I was entering a male dominated profession, a stereotypically masculine profession, a profession where use of harsh words and strong physique is expected. A woman, on the contrary "believed" to be emotional, weak and gullible, someone who is practically not fit for the hard job of a police officer. But I was on cloud nine.

As I started working in the field, I realized that there are many challenges that a woman has to face in her professional life. There is a society which expects her to be "woman-like," there is a family which expects her to be a good wife and a good mother before being anything else, there are her own expectations which determine her actions and responses; an amalgamation of these factors, results in a plethora of emotions that she has to undergo. For a world full of thought procedures and ideologies against women empowerment, police uniform denoted power, and power was always related and associated with men and their masculinity. So was I to fail in the field because of my intrinsic feminine being? Or was I to become manly, or "man-like" to be accepted as a good police officer? I had many choices and I chose the one I was most comfortable with. That was "Being myself".

There will always be expectations from each and every one of us. Some expectations will be realistic and practical which we will be able to achieve and others will be a result of patriarchal socialization of human beings, to which we should never give in. There will always be difficult times where the various roles that a woman is expected to play results in conflict with each other. But the only thing we need to remember is that the decision will always be ours. It all depends on us. It all depends on us. I was told at the very onset of my career that I will have to work three times more than my male counterpart in the same service, selected through the same examination process, so that I may prove my worth and significance. The path I chose was difficult, but again it was my choice whether to continue on that path with the challenges it had to offer to me, or to stop right there, take a turn and choose the easier way out.

To all the girls out there, I want to say that, being a woman in a man's world is just a conception. The moment you break free from this cage of thoughts, you are independent to do what you really want to.

Go; chase your dreams, irrespective of the speed breakers that emerge on that road.

Go, tell the world you belong here, irrespective of the fact that they will tell you, you don't.

Go, have what you always wanted to have, but then work for it, and work hard for it. That's all I would like to share with you right now. Have a successful, inspiring and fruitful life ahead. And no matter what, just, KEEP MOVING FORWARD!

Tejaswani Gautam IPS
Superintendent of Police, Anti-Corruption Bureau, Jaipur, Rajasthan



READER'S DEN: BOOK REVIEWS

Need a suggestion on what to read? Help is here, read some interesting book reviews to make up your mind.

EXPLORING THE MAGICAL REALM OF NARNIA

Title: The Magician's Nephew

Writer: C.S. Lewis

First Published: 1955

Publisher: Harper Collins, 2015

Edition:

Pages: 220

C.S. Lewis is a popular author of Children's Literature who is widely known for "The Chronicles of Narnia Series". The series consists of seven books in total. The first book

Magician's Nephew explores the genre of high fantasy. This book tells the story of the beginning of the fantastical land of Narnia. "This is a very important story", explains the author, "because it shows how all the comings and goings between our own world and the land of Narnia first began."

In the story, there are two young children: Digory Kirke and Polly Plummer ensnared in an experimental travel via "the wood between the worlds". Other characters include, Digory's Uncle Andrew the magician and two supernatural powers: Jadis, the white witch, and Aslan, the great lion, symbolic of Jesus Christ. In the novel Uncle Andrew, who creates several magical rings that allow transportation between worlds, lacking the courage to explore these worlds sends the children to this adventurous journey.



Priya Soni (BA Part III)

Winner of Book Review Competition, organized by the Department of English

EM FORSTER'S TRAGIC-COMIC TALE SET IN ITALY

Title: Where Angels Fear to Tread

Writer: EM Forster

First Published: 1905

Publisher: Penguin Group

Pages: 178

On traveling to Italy with her friend Caroline Abbott, the impulsive English widow Lilia Herriton outrages her dead husband's family by meeting and quickly becoming engaged to a dashing but deeply unsuitable Italian man twelve years her junior. Infuriated, her ex-brother-in-law Phillip sets off from England to her new home in the Tuscan town of Monteriano. From this point onwards this novel will take you to the

land of Renaissance artists, Italy. Phillip Herriton whose feelings are novel's focus is introduced as a not very likable young lawyer. In human relations he preserves aesthetic detachment, determined to find amusement in them, not passion.

The novel written by E. M. Forster, "Where Angels Fear to Tread", has been written and published in 1905. The full phrase is "Fools rush in where Angels fear to Tread". It's originally a line from "An Essay on Criticism" by Alexander Pope. It is a tragic-comic tale whose ironic tone whisks under an elegant, witty and elegiac carpet and its central theme is culture clash.

I would recommend this book specifically to the lit-students because E. M. Forster is a prominent writer of



Aafreen Khan (BA Part II)

Winner of Book Review Competition, organized by the Department of English

READING TAGORE'S CHANDALIKA

Title: Chandalika (Dance Drama)

Writer: Rabindranath Tagore

Anthology: Three Plays: Edited by Aanand Lal

First Published: 1938

Publisher: OUP, 2001 Edition

Pages: 200

"Chandalika" is a dance drama, in two acts written by Rabindranath Tagore, originally titled as *Mukti Dhara* in Bengali. Prakriti (Chandalika) is a maid from the lowest strata of society, and is considered as an untouchable as per the dictums of the Caste System of

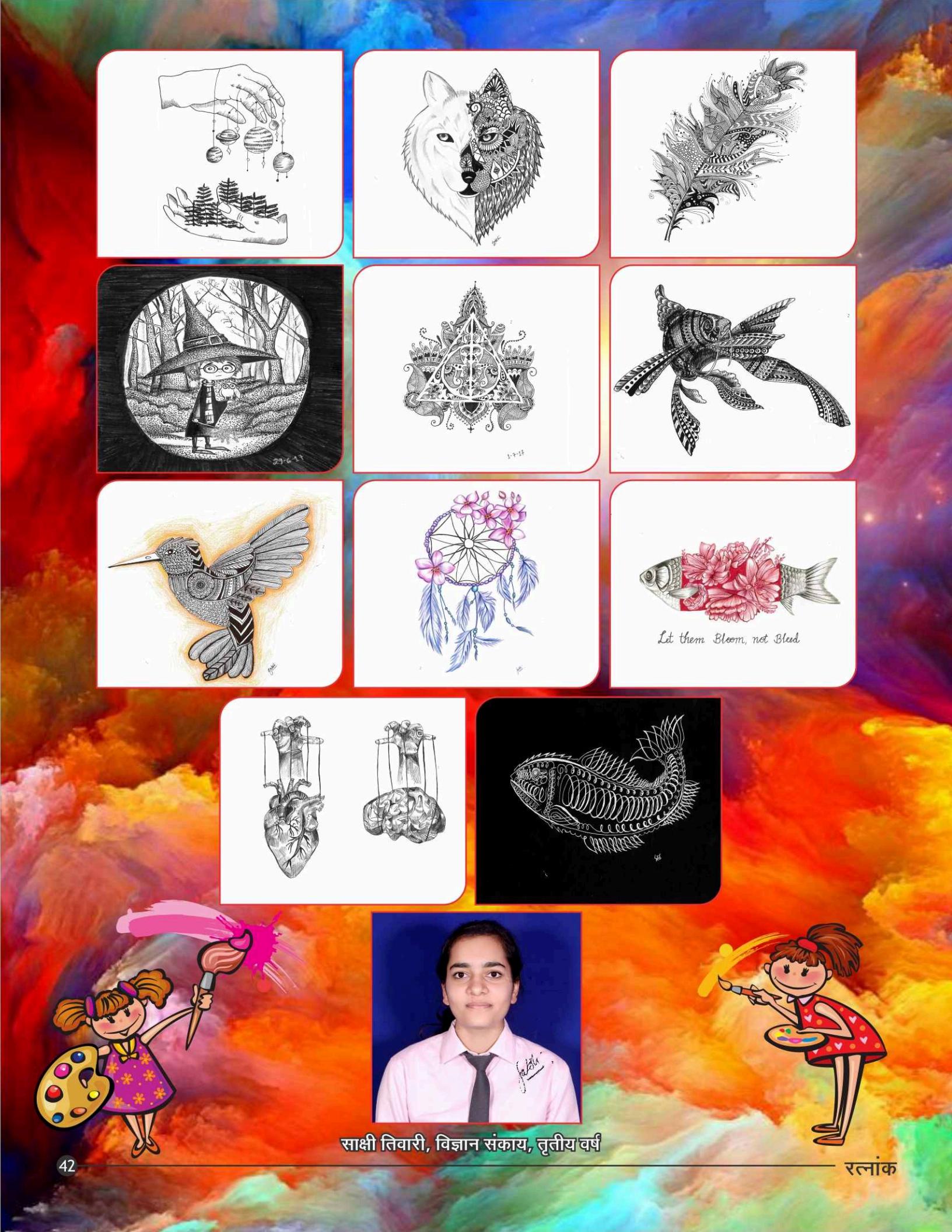
India.

This short drama is based on a Buddhist legend, in which Ananda the famous disciple of Lord Buddha requests Prakriti for a drink of water. She informs him that she is an untouchable girl and her touch will corrupt the purity of water, despite this fact, Ananda still insists to drink water. This act of kindness plays a major role in the life of Prakriti who realizes that the shackles of caste system can be ultimately broken with conviction. Tagore provides an alternative religion of Buddhism in which all humans are considered as equals. Prakriti falls in love with this Buddhist monk, who makes her aware of herself.



Alka Charan (BA Part I)

Winner of Book Review Competition, organized by the Department of English



साक्षी तिवारी, विज्ञान संकाय, तृतीय वर्ष